वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:6 | अंक: 75 | रविवार 23 अगस्त 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

गणपतपुरा में माहेश्वरी मेडिकल इंस्टीट्यूट की नींव, इलाज और रिसर्च पर रहेगा जोर

ओम बिरला ने किया माहेश्वरी मेडिकल इंस्टीट्यूट का शिलान्यास, चिकित्सा शिक्षा को मिलेगी नई दिशा

जयपुर में बनेगा मेडिकल इंस्टीट्यूट, इलाज और रिसर्च पर रहेगा फोकस

जयपुर. शाबाश इंडिया

माहेश्वरी समाज की ओर से जयपुर के गणपतपुरा में माहेश्वरी इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज एंड रिसर्च सेंटर स्थापित किया जाएगा। शनिवार को बिड़ला ऑडिटोरियम में आयोजित समारोह में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला और उद्योगपति एवं समाजसेवी हरिमोहन बांगड़ ने संस्थान का शिलान्यास किया। इससे पहले सुबह गणपतपुरा स्थित परियोजना स्थल पर विधिवत भूमि पूजन किया गया। संस्थान की स्थापना को जयपुर में चिकित्सा शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और चिकित्सा अनुसंधान के विस्तार की दिशा में महत्वपूर्ण पहल माना जा रहा है। माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष उमेश सोनी ने बताया कि प्रस्तावित संस्थान में मेडिकल एजुकेशन, उपचार और चिकित्सा अनुसंधान पर विशेष फोकस रहेगा। यहां आधुनिक सुविधाओं के साथ चिकित्सा शिक्षा को बढ़ावा देने और शोध के लिए बेहतर संसाधन विकसित किए जाएंगे। संस्थान के माध्यम से विद्यार्थियों को चिकित्सा क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और शोध के लिए आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराने का प्रयास किया जाएगा। माहेश्वरी समाज की एजुकेशन कमेटी के तहत जयपुर में 11 शिक्षण संस्थान संचालित हैं। इनमें माहेश्वरी पब्लिक स्कूल जवाहर नगर, प्रताप नगर, बगरू और कालवाड़ रोड, माहेश्वरी सीनियर सेकेंडरी स्कूल तिलक नगर, एमपीएस इंटरनेशनल तिलक नगर, माहेश्वरी गर्ल्स पब्लिक स्कूल विद्याधर नगर, माहेश्वरी गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल चौड़ा रास्ता, माहेश्वरी गर्ल्स पीजी कॉलेज प्रताप नगर, एमपीएस संस्कृति बनीपार्क और एमपीएस संस्कृति जगतपुरा शामिल हैं। माहेश्वरी समाज की ओर से चिकित्सा क्षेत्र में महेश अस्पताल, माहेश्वरी डायग्नोस्टिक सेंटर विद्याधर नगर, माहेश्वरी डायलिसिस डायग्नोस्टिक एंड रिसर्च सेंटर निर्माण नगर तथा माहेश्वरी आरोग्यम्‌ प्राकृतिक चिकित्सा एवं शिक्षण संस्थान संचालित किए जा रहे हैं।

पदाधिकारियों ने संभाली जिम्मेदारियां

शिलान्यास समारोह में माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष उमेश सोनी, प्रोजेक्ट चेयरमैन बजरंग लाल बाहेती, बिल्डिंग चेयरमैन डॉ. (सीए) के.सी. परवाल, शिक्षा उपाध्यक्ष निर्मल दरगड़, शिक्षा महासचिव कमल सोमानी, कोषाध्यक्ष अरुण कुमार मालू, महामंत्री सीए रोहित परवाल, प्रोजेक्ट सचिव श्याम सुंदर भंडारी, बिल्डिंग सचिव मनोज भूतड़ा और कार्यक्रम संयोजक अंकुर वल्दू चितलांगिया सहित समाज के अन्य पदाधिकारी मौजूद रहे। माहेश्वरी इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज एंड रिसर्च सेंटर के माध्यम से चिकित्सा शिक्षा, उपचार और अनुसंधान को एक साथ आगे बढ़ाने की योजना है। गणपतपुरा में बनने वाला यह संस्थान आने वाले समय में चिकित्सा क्षेत्र में विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं और मरीजों के लिए उपयोगी केंद्र के रूप में विकसित हो सकता है। शिलान्यास के साथ परियोजना ने औपचारिक रूप से आगे बढ़ने की दिशा में कदम रखा है।

सामाजिक सेवा के क्षेत्र में भी सक्रिय

समाज की ओर से सामाजिक सेवा के क्षेत्र में भी कई संस्थाएं और सुविधाएं संचालित की जा रही हैं। इनमें कृष्णधाम वृद्धाश्रम, सर्वधर्म मोक्षधाम चांदपोल तथा जनोपयोगी भवन उत्सव, अभिनन्दन और आनन्दम्‌ जैसी सुविधाएं शामिल हैं। इन संस्थाओं के माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों के लिए सामाजिक और जनोपयोगी सेवाएं उपलब्ध कराने का प्रयास किया जा रहा है।

हरियाली तीज पर सजा काशी का मंच, सर्व कल्याण ब्राह्मण महिला संगठन ने मनाया स्थापना दिवस

कजरी, गीत, नृत्य और विविध खेलों से महिलाओं ने हरियाली तीज समारोह में बांधा समां

वाराणसी. शाबाश इंडिया

सर्व कल्याण ब्राह्मण महिला संगठन, काशी द्वारा संगठन के स्थापना दिवस एवं हरियाली तीज के पावन अवसर पर महमूरगंज स्थित एक होटल में भव्य एवं रंगारंग समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में संगठन की महिला सदस्यों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। महिलाओं ने हरियाली तीज की परंपराओं, भारतीय संस्कृति और नारी शक्ति की जीवंत झलक प्रस्तुत की। पूरे आयोजन के दौरान गीत, कजरी, नृत्य, मनोरंजक खेल एवं सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने वातावरण को उल्लास और उमंग से भर दिया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि डॉ. रुचि मिश्रा, सहायक आचार्य, धीरेंद्र महिला महाविद्यालय, वाराणसी ने दीप प्रज्वलित कर किया। उन्होंने सभी को हरियाली तीज एवं संगठन के स्थापना दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति और परंपराओं को जीवंत बनाए रखने में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है।ऐसे आयोजन महिलाओं को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने के साथ-साथ आपसी प्रेम, सौहार्द एवं सामाजिक एकजुटता को मजबूत करने का अवसर प्रदान करते हैं।

समारोह की अध्यक्षता संगठन की संस्थापिका एवं अध्यक्ष डॉ. सरिता त्रिपाठी ने की। उन्होंने संगठन की स्थापना के उद्देश्यों एवं अब तक की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि संगठन निरंतर महिला सशक्तिकरण, सामाजिक सेवा, सांस्कृतिक संरक्षण तथा समाज में सकारात्मक वातावरण के निर्माण के लिए कार्य कर रहा है। उन्होंने कहा कि हरियाली तीज केवल एक पर्व नहीं, बल्कि भारतीय नारी की आस्था, प्रेम, सौंदर्य, संस्कार और पारिवारिक मूल्यों से जुड़ी समृद्ध परंपरा है। कार्यक्रम का संचालन प्रोफेसर नम्रता मिश्रा ने किया, जबकि रजनी शर्मा ने उपस्थित अतिथियों एवं सभी सहभागियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम की शुरूआत मांडवी एवं शांभवी द्वारा प्रस्तुत मनमोहक गणेश वंदना से हुई। इसके बाद महिलाओं ने कजरी, गीत एवं नृत्य की शानदार प्रस्तुतियां देकर सभी का मन मोह लिया। विभिन्न मनोरंजक खेलों एवं अन्य गतिविधियों में महिलाओं ने पूरे उत्साह के साथ भाग लिया। तीज के पारंपरिक रंग में सजे इस आयोजन में महिलाओं का उत्साह देखते ही बन रहा था। कार्यक्रम के दौरान हंसी-खुशी और उल्लास का माहौल बना रहा तथा सभी ने एक-दूसरे को हरियाली तीज की शुभकामनाएं दीं। आयोजन में डॉ. ममता टंडन, अंजली मिश्रा, मधु तिवारी, रचना वाजपेयी, अर्चना त्रिपाठी, मंजू पांडे, शशि मिश्रा, रेखा मिश्रा, ज्योत्सना मिश्रा, नम्रता मिश्रा, चिंता ओझा, शशि तिवारी, सोनम, पिंकी, संध्या, शशिकला, गोदावरी, रितु, ममता पाठक, प्रीति, सुषमा, करुणा, सविता, सुमन, गुड़िया, डॉ. मालविका, जमुना शुक्ला, मंजू तिवारी, वंदना, उमा दीक्षित, डॉ. माधवी पांडे, वीणा अग्निहोत्री, राम तिवारी, रागिनी सहित बड़ी संख्या में संगठन की सदस्य एवं महिलाएं उपस्थित रहीं। समारोह के अंत में संगठन की पदाधिकारियों ने सभी अतिथियों एवं महिला सदस्यों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि भविष्य में भी संगठन द्वारा भारतीय संस्कृति, महिला सम्मान, सामाजिक सेवा एवं जनकल्याण से जुड़े कार्यक्रमों का निरंतर आयोजन किया जाएगा। स्थापना दिवस एवं हरियाली तीज का यह समारोह आपसी प्रेम, सौहार्द और सांस्कृतिक परंपराओं को समर्पित यादगार आयोजन बन गया।

जरूरतमंद विद्यार्थियों की शिक्षा में सहयोग करना समाज की साझा जिम्मेदारी: बाफना

मिशन मुस्कान के तहत 110 विद्यार्थियों को गणवेश एवं शैक्षणिक सामग्री की सेवा दी

अजमेर. शाबाश इंडिया

लायंस क्लब अजमेर आस्था द्वारा प्रांतीय स्लोगन 'फ्लाइट ऑफ ड्रीम' के अंतर्गत संचालित 'मिशन मुस्कान' के माध्यम से जरूरतमंद विद्यार्थियों के चेहरों पर मुस्कान लाने के साथ उनकी शिक्षा को मजबूत करने की दिशा में निरंतर सेवा कार्य किए जा रहे हैं। इसी क्रम में महाबोधि एजुकेशन सोसायटी, गौतम नगर, अजमेर में संचालित प्राचीन महाबोधि विद्यालय के 110 विद्यार्थियों को गणवेश, स्कूल बैग एवं खाद्य सामग्री वितरित की गई। क्लब सचिव लायन अनिल चोरड़िया ने बताया कि कार्यक्रम को विद्यार्थियों के लिए रोचक एवं प्रेरणादायी बनाने के उद्देश्य से सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक इसमें भाग लिया। विजेता विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन भी किया गया। इसके बाद 110 विद्यार्थियों को गणवेश, स्कूल बैग एवं खाद्य सामग्री वितरित की गई। यह सेवा कार्य समाजसेवी लायन राकेश पालीवाल, लायन अतुल पाटनी, दिल्ली निवासी राजेश जैन तथा अजमेर के होलसेल होजरी व्यवसायियों के सहयोग से संपन्न हुआ। विद्यालय प्रशासन की ओर से क्लब सदस्यों का स्वागत किया गया। इस दौरान उन्हें विद्यालय का अवलोकन करवाते हुए बताया गया कि संस्थान शिक्षा के साथ विद्यार्थियों में संस्कार निर्माण के लिए भी कार्य कर रहा है। विद्यालय में बौद्ध गुरु दलाई लामा, पूर्व उपराष्ट्रपति भैरोसिंह शेखावत, फिल्म कलाकार किरण बेदी सहित अनेक राष्ट्रीय स्तर की हस्तियां भी आ चुकी हैं। क्लब अध्यक्ष लायन कमल बाफना ने सेवा सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि जरूरतमंद परिवारों के बच्चों को शिक्षा के लिए आवश्यक सहयोग उपलब्ध करवाना केवल किसी एक संस्था का कार्य नहीं, बल्कि समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि विद्यालय के जरूरतमंद विद्यार्थियों के लिए भविष्य में भी शैक्षणिक सहयोग जारी रखा जाएगा। कार्यक्रम संयोजक एवं प्रांतीय सभापति मिशन मुस्कान लायन अतुल पाटनी ने कहा कि बच्चों के चेहरों पर दिखाई देने वाली खुशी ही सेवा कार्य की सबसे बड़ी उपलब्धि है। उन्होंने समाज की अन्य संस्थाओं, व्यवसायियों एवं सामाजिक संगठनों से भी आह्वान किया कि वे अपने संसाधनों और सामर्थ्य के अनुसार जरूरतमंद विद्यार्थियों की शिक्षा एवं आवश्यकताओं में सहयोग करें, ताकि सेवा का यह अभियान और व्यापक बन सके। इस अवसर पर पूर्व प्रधानाचार्य सुरेश चंद सोनी, गौतम नगर क्षेत्र के प्रबुद्धजन, विद्यालय प्रशासन एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

लायंस क्लब जयपुर मेट्रो ने किया वृक्षारोपण

जयपुर. शाबाश इंडिया

लायंस क्लब जयपुर मेट्रो द्वारा 21 अगस्त 2026 को वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में क्लब के सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए विभिन्न प्रकार के पौधे लगाए तथा पर्यावरण संरक्षण एवं हरियाली बढ़ाने का संदेश दिया। क्लब के मानद सचिव लायन अनिल जैन ने कहा कि वृक्ष हमारे जीवन का आधार हैं और पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए अधिक से अधिक पौधे लगाना तथा उनकी नियमित देखभाल करना हम सभी की जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि क्लब द्वारा सेवा गतिविधियों के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में भी निरंतर कार्य किए जा रहे हैं। कार्यक्रम में लायन सुरेंद्र डिगीवाल, लायन अनिल जैन, लायन रमेश कुमार सेठी, लायन नीलम सेठी, लायन एन.के. सेठी, लायन डॉ. महेश माहेश्वरी, लायन अशोक लुहाड़िया, लायन डॉ. नमोकार जैन, लायन नेमी पाटनी, लायन मधु पाटनी, प्रकाश बाकलीवाल एवं निलेश जैन ने सहभागिता की। कार्यक्रम के संयोजक लायन रमेश कुमार सेठी रहे। उनके कुशल संयोजन एवं व्यवस्थाओं के लिए क्लब की ओर से आभार व्यक्त किया गया। लायंस क्लब जयपुर मेट्रो ने नागरिकों से अधिक से अधिक पौधे लगाने तथा लगाए गए पौधों की नियमित देखभाल करने का आह्वान किया। क्लब ने संदेश दिया कि वृक्ष लगाना ही नहीं, बल्कि उन्हें संरक्षित करना भी पर्यावरण संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। ''वृक्ष लगाएं, पर्यावरण बचाएं और आने वाली पीढ़ियों का भविष्य सुरक्षित बनाएं।''

रिपोर्ट: राकेश जी गोदीका

राजनीति

राजस्थान विधानसभा में हंगामा

कांतिलाल मांडोत

राजस्थान विधानसभा का सत्र हंगामे और नारेबाजी के बीच अनिश्चितकाल के लिए स्थगित होना लोकतांत्रिक व्यवस्था के सामने गंभीर लोकतांत्रिक सवाल खड़ा करता है। जनता के मुद्दों के सदन को राजनीतिक प्रदर्शन का मंच बनाना उचित है? विधानसभा जनता के सवाल पूछने और सरकार से जवाब मांगने का मंच है। सदन बाधित होने का नुकसान पूरे राजस्थान को होता है। सत्र में द्रव्यवती नदी पर एलिवेटेड रोड, खाद-बीज संकट, स्कूलों की मरम्मत और शिक्षा व्यवस्था जैसे महत्वपूर्ण विषय प्रश्नकाल में उठने थे। कांग्रेस विधायक और पूर्व मंत्री शांति धारीवाल ने द्रव्यवती नदी से जुड़े एलिवेटेड रोड का सवाल लगाया था, जबकि प्रमोद जैन भाया खाद-बीज संकट पर सरकार से जवाब मांगने की तैयारी में थे। इन पर चर्चा से सरकार की नीतियों और जमीनी स्थिति की तस्वीर आती। हंगामे ने यह अवसर सीमित कर दिया। विपक्ष के लिए आत्ममंथन का विषय है। सरकार को घेरने का विपक्ष का सबसे प्रभावी हथियार विधानसभा है। सवाल, पूरक प्रश्न और आंकड़े मांगना विपक्ष का मजबूत तरीका है। यदि सदन ही नहीं चलेगा तो विपक्ष सरकार से जवाब किस मंच पर मांगेगा? विधानसभा चुनाव नजदीक हैं। राजनीतिक दल मुद्दों को धार देंगे। यह चुनावी राजनीति का स्वाभाविक हिस्सा है। लेकिन चुनावी संघर्ष और विधानसभा की कार्यवाही अलग होनी चाहिए। सड़क और मंच चुनावी राजनीति के लिए हैं, जबकि विधानसभा का समय सीमित है और जनता के पैसे से चलता है। स्कूलों की स्थिति को लेकर कॉकरोच जनता पार्टी के अभियान और बगरू के रामपुरा गांव में हुई मारपीट ने शिक्षा के मुद्दे को राजनीतिक बहस के केंद्र में ला दिया है। जर्जर भवन और बुनियादी सुविधाओं की कमी गंभीर विषय हैं। ऐसे भवन पर प्रशासन को तत्काल कार्रवाई करनी चाहिए। बच्चों की सुरक्षा सर्वोपरि है। हालांकि शिक्षा की बदहाली का मुद्दा उठाने और उसे राजनीतिक टकराव में बदलने के बीच अंतर है। बगरू की घटना में दोनों पक्षों के अलग-अलग दावे हैं, इसलिए निष्पक्ष जांच जरूरी है।

संपादकीय

चीनी की मिठास में कड़वाहट

भारत, ब्राजील के बाद दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा चीनी उत्पादक देश है, लेकिन घरेलू बाजार में चीनी की बढ़ती कीमतों ने चिंता बढ़ा दी है। जुलाई के मध्य में करीब 48 रुपये किलो रहने वाले खुदरा भाव अगस्त में 55 से 65 रुपये किलो तक पहुंचने की खबरें हैं। त्योहारों का मौसम शुरू होने से पहले कीमतों में यह उछाल आम उपभोक्ता की जेब पर असर डाल रहा है। मिठाई, पेय, चॉकलेट और रोजमर्रा के इस्तेमाल में चीनी की

जरूरत को देखते हुए यह केवल बाजार का मामला नहीं, बल्कि उपभोक्ता चिंता भी बन गया है। चालू चीनी सत्र 2025-26 में उत्पादन अनुमान शुरूआती स्तर से काफी नीचे रहने की आशंका है। उत्पादन में कमी तथा शुरूआती स्टॉक घटने से नए पेराई सत्र से पहले बाजार में उपलब्धता पर दबाव बढ़ा है। गन्ने की फसल पर रोग, कीट प्रकोप, अत्यधिक बारिश और जलभराव जैसी समस्याओं ने कई क्षेत्रों में उत्पादन को प्रभावित किया है। महाराष्ट्र, कर्नाटक और उत्तर प्रदेश जैसे प्रमुख गन्ना उत्पादक राज्यों का असर आपूर्ति पर पड़ता है। कम शुरूआती स्टॉक और आगामी त्योहारों की मांग ने कीमतों को और सहारा दिया है। चीनी की कीमतों में तेजी के लिए इथेनॉल उत्पादन को जिम्मेदार ठहराने की चर्चा हो रही है, लेकिन सरकार का कहना है कि मौजूदा संकट को इथेनॉल से जोड़ना सही नहीं है। सरकार के अनुसार चीनी मिलों की आर्थिक स्थिति सुधारने और गन्ना किसानों के भुगतान में मदद के लिए इथेनॉल नीति की भूमिका रही है। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में भी चीनी महंगी हुई है, जिससे घरेलू बाजार पर दबाव पड़ा है। सीमित उपलब्धता, बढ़ी मांग और कुछ मामलों में जमाखोरी ने स्थिति को जटिल बनाया है। सरकार ने कीमतों पर नियंत्रण और आपूर्ति बनाए रखने के लिए कई कदम उठाए हैं। 1 अगस्त से चीनी डीलरों पर 400 टन की स्टॉक सीमा लागू की गई है। सितंबर से अधिक मात्रा में चीनी इस्तेमाल करने वाले थोक उपभोक्ताओं को 15 दिन की खपत से अधिक स्टॉक रखने की अनुमति नहीं होगी। सबसे अहम कदम 20 अगस्त को 10 लाख मीट्रिक टन कच्ची चीनी के शुल्क-मुक्त आयात की अनुमति है। यह आयात 31 अक्टूबर तक शुल्क दर कोटा के तहत होगा। इससे घरेलू उपलब्धता बढ़ने और त्योहारी मांग के दौरान कीमतों पर दबाव कम होने की उम्मीद है। हालांकि तात्कालिक उपाय जरूरी हैं, लेकिन स्थायी समाधान खेत से शुरू होगा। बदलते मौसम, रोग और जल प्रबंधन की चुनौतियों से निपटने के लिए किसानों को बेहतर बीज, रोग प्रतिरोधी किस्में, सिंचाई सुविधाएं और वैज्ञानिक खेती की जानकारी उपलब्ध करानी होगी। उत्पादन के पूर्वानुमान को अधिक सटीक बनाना भी जरूरी है, ताकि अनुमान और वास्तविक उत्पादन के बीच बड़ा अंतर न रहे। चीनी मिलों की वित्तीय स्थिति मजबूत करने और किसानों को समय पर भुगतान सुनिश्चित करना होगा। चीनी केवल मिठास का साधन नहीं है। यह करोड़ों किसानों की आय, लाखों श्रमिकों के रोजगार और खाद्य उद्योग की आपूर्ति शृंखला से जुड़ी है।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

आर्यभट्ट से शुभांशु शुक्ला तक

राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस भारत की अंतरिक्ष यात्रा, वैज्ञानिक आत्मनिर्भरता और वैश्विक अंतरिक्ष क्षेत्र में बढ़ते प्रभाव का प्रतीक है। 23 अगस्त 2023 को चंद्रयान-3 के विक्रम लैंडर की चंद्रमा पर सफल सॉफ्ट लैंडिंग ने भारत को दुनिया के चुनिंदा देशों की कतार में खड़ा किया। भारत चंद्रमा पर उतरने वाला चौथा देश और दक्षिणी ध्रुवीय क्षेत्र के पास पहुंचने वाला पहला देश बना। इसी उपलब्धि की स्मृति में 23 अगस्त को राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस मनाया जाता है। भारत की अंतरिक्ष यात्रा सीमित संसाधनों से शुरू हुई थी। 19 अप्रैल 1975 को आर्यभट्ट उपग्रह के प्रक्षेपण ने इस यात्रा को नई दिशा दी। इसके बाद भारत ने संचार, मौसम, पृथ्वी अवलोकन, नेविगेशन और दूरसंचार के क्षेत्र में अपनी क्षमताएं विकसित कीं। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने धीरे-धीरे ऐसी तकनीक विकसित की, जिसने भारत को अंतरिक्ष क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाया। मंगलयान ने भारत की अंतरग्रहीय क्षमता को दुनिया के सामने रखा। इसके बाद चंद्रयान-1 और चंद्रयान-2 ने चंद्रमा के अध्ययन को आगे बढ़ाया। चंद्रयान-3 ने ऐतिहासिक सफलता हासिल कर यह साबित किया कि भारत जटिल अंतरिक्ष अभियानों को सीमित लागत में भी सफलतापूर्वक पूरा कर सकता है। इसके बाद आदित्य-एल1 मिशन के जरिए भारत ने सूर्य के अध्ययन की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया। जनवरी 2024 में इसे सूर्य-पृथ्वी प्रणाली के एल1 बिंदु के आसपास की कक्षा में स्थापित किया गया। भारत की अंतरिक्ष उपलब्धियों की चर्चा भारतीय मूल की अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स के उल्लेख के बिना भी अधूरी लगती है। उन्होंने नासा के अभियानों में लंबे समय तक अंतरिक्ष में रहकर, कई स्पेसवॉक करके और अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन की कमान संभालकर विश्व स्तर पर पहचान बनाई। हालांकि उनकी उपलब्धियां अमेरिकी अंतरिक्ष कार्यक्रम का हिस्सा हैं, उनकी सफलता भारतीय मूल के युवाओं के लिए प्रेरणा का महत्वपूर्ण स्रोत रही है। अब भारत के अपने मानव अंतरिक्ष कार्यक्रम को नई प्रेरणा ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला से मिली है। 25 जून 2025 को एक्सिओम-4 मिशन के पायलट के रूप में प्रक्षेपित होकर उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन की यात्रा की। वह अंतरिक्ष स्टेशन पहुंचने वाले पहले भारतीय बने और राकेश शर्मा के बाद अंतरिक्ष में जाने वाले दूसरे भारतीय नागरिक हैं। मिशन के दौरान उन्होंने करीब 18 दिन अंतरिक्ष में बिताए और सूक्ष्मगुरुत्व वातावरण में कई वैज्ञानिक प्रयोगों में हिस्सा लिया। इन प्रयोगों में टार्डिग्रेड, मांसपेशियों पर अंतरिक्ष के प्रभाव, मेथी और मूंग के बीजों का अंकुरण, साइनोबैक्टीरिया तथा सूक्ष्म शैवाल जैसे विषय शामिल थे। यह अनुभव भारत के भविष्य के मानव अंतरिक्ष अभियानों के लिए महत्वपूर्ण वैज्ञानिक और परिचालन अनुभव प्रदान करता है। भारत का अगला बड़ा लक्ष्य गगनयान है। इसके तहत भारतीय अंतरिक्ष यात्रियों को स्वदेशी तकनीक के माध्यम से अंतरिक्ष में भेजने की तैयारी चल रही है। शुभांशु शुक्ला का अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन तक पहुंचना इस दिशा में व्यावहारिक अनुभव बढ़ाने वाला महत्वपूर्ण पड़ाव है। गगनयान की सफलता भारत को उन चुनिंदा देशों की श्रेणी में पहुंचा सकती है। तकनीक का महत्व वैज्ञानिक उपलब्धियों तक सीमित नहीं है। मौसम पूर्वानुमान, कृषि, संचार, नेविगेशन, स्वास्थ्य और बुनियादी ढांचे की निगरानी में उपग्रह महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। नासा के साथ सहयोग और निसार जैसे संयुक्त मिशन भारत की बढ़ती अंतर्राष्ट्रीय भागीदारी को भी दर्शाते हैं। राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस नई पीढ़ी के सपनों का दिवस भी है।

सिनेमा, संस्कृति और हाशिए पर जाते त्योहार

डॉ. विजय गर्ग

सिनेमा केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं है। यह समाज का आईना, संस्कृति का कथाकार और बदलते सामाजिक मूल्यों का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज भी है। कई दशकों तक भारतीय सिनेमा ने त्योहारों, परंपराओं, पारिवारिक रिश्तों और सांस्कृतिक जीवन को पर्दे पर जीवंत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। गीत-संगीत, उत्सव, रीति-रिवाज, पारंपरिक वेशभूषा, खान-पान और सामूहिक समारोह फिल्मों का अभिन्न हिस्सा रहे हैं और उन्होंने दर्शकों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने का काम किया है लेकिन आज सिनेमा का बदलता परिदृश्य एक अलग कहानी कहता है। कहानी कहने के तरीकों, दर्शकों की पसंद और सामाजिक जीवन में बदलाव के साथ पारंपरिक त्योहारों को मुख्यधारा की फिल्मों में पहले की तुलना में कम स्थान मिलता दिखाई देता है। दीपावली, होली, दशहरा, बैसाखी, लोहड़ी, पोंगल, ओणम, ईद और देश के अनेक क्षेत्रीय त्योहार, जो कभी फिल्मों में भावनात्मक और सांस्कृतिक गहराई जोड़ते थे, अब धीरे-धीरे हाशिए की ओर जाते दिखाई देते हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि भारतीय सिनेमा से त्योहार पूरी तरह गायब हो गए हैं। वे आज भी फिल्मों, टेलीविजन, संगीत वीडियो और डिजिटल सामग्री में दिखाई देते हैं। लेकिन उनकी भूमिका बदल गई है। पहले किसी फिल्म में त्योहार का दृश्य केवल सजावट नहीं होता था। वह परिवार के पुनर्मिलन, भावनात्मक मुलाकात, पुराने मतभेदों को दूर करने, खुशी बांटने और सामाजिक मेल-जोल का महत्वपूर्ण अवसर बन सकता था। आज कई बार त्योहार केवल पृष्ठभूमि, छोटे दृश्य या व्यावसायिक प्रस्तुति तक सीमित रह जाते हैं। इस बदलाव का एक प्रमुख कारण भारतीय परिवार की बदलती संरचना है। पुरानी फिल्मों में अक्सर बड़े परिवारों को साथ रहते हुए दिखाया जाता था, जहां त्योहार दादा-दादी, माता-पिता, बच्चों, रिश्तेदारों और पड़ोसियों को एक साथ लाने का अवसर बनते थे। त्योहार सामूहिक खुशी का प्रतीक था। संयुक्त परिवारों की जगह छोटे परिवारों का बढ़ना, शहरी जीवनशैली और रोजगार के लिए पलायन ने त्योहार मनाने के सामाजिक अनुभव को भी बदल दिया है। सिनेमा स्वाभाविक रूप से इन परिवर्तनों को प्रतिबिंबित करता है। डिजिटल मनोरंजन के विस्तार ने कहानी कहने की शैली को और बदल दिया है। दर्शक अब फिल्मों और वेब सीरीज को अनेक डिजिटल प्लेटफॉर्म पर देखते हैं और अक्सर तेज गति वाली कहानियों को प्राथमिकता देते हैं। निमार्ताओं के सामने दर्शकों का ध्यान बनाए रखने की चुनौती है। ऐसे वातावरण में लंबे सांस्कृतिक दृश्य, त्योहार की तैयारियां, पारंपरिक रस्में और पारिवारिक मिलन के दृश्य कम समय पा सकते हैं। सिनेमा पर व्यावसायिक दबाव भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। निर्माता अक्सर ऐसे विषयों को प्राथमिकता देते हैं जिन्हें विभिन्न क्षेत्रों और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में व्यापक दर्शक मिल सकें। किसी विशेष क्षेत्र का त्योहार दूसरे क्षेत्र के दर्शकों के लिए अपरिचित हो सकता है, जबकि महत्वाकांक्षा, रिश्ते, अपराध, तकनीक या व्यक्तिगत संघर्ष जैसे विषय अधिक सार्वभौमिक माने जाते हैं। परिणामस्वरूप, व्यापक व्यावसायिक अपील के लिए सांस्कृतिक विशिष्टता कभी-कभी पीछे छूट जाती है। लेकिन यहां एक महत्वपूर्ण सवाल उठता है—जब सिनेमा धीरे-धीरे अपने सांस्कृतिक परिवेश को खोने लगे तो क्या होता है? समाज अपनी संस्कृति को केवल पुस्तकों और संग्रहालयों के माध्यम से सुरक्षित नहीं रखता। संस्कृति रोजमर्रा के अनुभवों, कहानियों, गीतों, भोजन, वेशभूषा, रीति-रिवाजों और सामूहिक स्मृतियों में जीवित रहती है। सिनेमा इन तत्वों को दृश्य और भावनात्मक रूप से संरक्षित करने की अनूठी क्षमता रखता है। एक फिल्म ऐसी परंपरा को अगली पीढ़ी तक पहुंचा सकती है, जिसे वह पीढ़ी शायद उसी रूप में अनुभव न कर पाए। त्योहार इसलिए भी महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे केवल धार्मिक या पारंपरिक आयोजन नहीं होते। वे लोगों को मिलने, साथ बैठने, भोजन साझा करने, शुभकामनाएं देने, पुराने मतभेद भुलाने और रिश्तों को मजबूत करने का अवसर देते हैं। वे पीढ़ियों को जोड़ते हैं। दादा-दादी बच्चों को परंपराओं के बारे में बताते हैं, माता-पिता पारिवारिक संस्कार अगली पीढ़ी तक पहुंचाते हैं और समुदाय सामूहिक उत्सव में एक-दूसरे के करीब आते हैं। जब सिनेमा ऐसे क्षणों को सार्थक ढंग से प्रस्तुत करता है, तो वह केवल मनोरंजन नहीं करता—वह सामाजिक इतिहास को भी दर्ज करता है। पुरानी फिल्मों में त्योहारों के चित्रण को याद करें। किसी घर का सजा हुआ आंगन, पारंपरिक भोजन बनाते परिवार के सदस्य, नए कपड़े पहने बच्चे, एक-दूसरे के घर जाते पड़ोसी और वातावरण में गूंजता संगीत—ये दृश्य अपनापन और सामूहिकता का अनुभव कराते थे। ऐसे दृश्य लोगों की सामूहिक स्मृति का हिस्सा बन गए। अनेक दर्शकों के लिए सिनेमा सांस्कृतिक परंपराओं को देखने और समझने की खिड़की बन गया। इसके विपरीत, आधुनिक सिनेमा में अक्सर अधिक व्यक्तिगत जीवन दिखाई देता है। मुख्य पात्र किसी बड़े शहर में अकेला रह सकता है, काम के दबाव से जूझ सकता है, रिश्तों की उलझनों से गुजर सकता है या व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने में लगा हो सकता है। ये कहानियां गलत नहीं हैं; वे आधुनिक जीवन की वास्तविकताओं को सामने रखती हैं। लेकिन जब व्यक्तिगत जीवन और व्यक्तिवाद प्रमुख कथानक बन जाते हैं, तब संस्कृति का सामूहिक पक्ष अपेक्षाकृत कम दिखाई दे सकता है। त्योहारों का बढ़ता व्यावसायीकरण भी एक महत्वपूर्ण कारण है। त्योहार अब बड़े उपभोक्ता आयोजनों का रूप लेते जा रहे हैं। विज्ञापन, खरीदारी अभियान, सोशल मीडिया ट्रेंड और ब्रांड प्रचार कई बार उत्सव की मूल भावना पर हावी हो जाते हैं। सिनेमा भी इसी व्यावसायिक वातावरण का हिस्सा है। ऐसे में यह खतरा पैदा होता है कि त्योहारों का गहरा सांस्कृतिक अर्थ उपभोग, विलासिता और दिखावे की तस्वीरों में बदल जाए। त्योहार केवल महंगे कपड़ों, सजावट, उपहारों या पार्टियों के लिए याद नहीं किए जाने चाहिए। उनका वास्तविक महत्व रिश्तों, कृतज्ञता, समुदाय, परंपरा और साझा खुशी में है। सिनेमा में इतनी शक्ति है कि वह दर्शकों को इस अंतर का एहसास करा सके। हालांकि, हमें अतीत को पूरी तरह आदर्श भी नहीं मानना चाहिए। सभी पारंपरिक प्रथाएं समान रूप से समावेशी नहीं थीं और सामाजिक प्रगति के साथ अनेक परंपराओं में सकारात्मक बदलाव आवश्यक भी रहे हैं। केवल पुराना होने के कारण हर परंपरा को बचाए रखना जरूरी नहीं है। संस्कृति को समय के साथ विकसित होना चाहिए। उद्देश्य समाज को अतीत में स्थिर कर देना नहीं, बल्कि सार्थक मूल्यों को सुरक्षित रखते हुए परंपराओं को समय के अनुरूप बदलने देना होना चाहिए। यहीं समकालीन फिल्मकारों के सामने एक महत्वपूर्ण अवसर है। सिनेमा केवल पुराने त्योहारों के दृश्यों को दोहराने के बजाय उन्हें आधुनिक कहानियों के साथ जोड़ सकता है। कोई फिल्म दिखा सकती है कि घर से दूर रहने वाला प्रवासी परिवार अपने त्योहार को किस तरह मनाता है। कोई कहानी शहर में पले-बढ़े बच्चों के अपने दादा-दादी की परंपराओं से दोबारा जुड़ने पर केंद्रित हो सकती है। कोई फिल्म अलग-अलग समुदायों के लोगों को मिलकर त्योहार मनाते हुए दिखाकर सांस्कृतिक विविधता और सामाजिक सद्भाव का संदेश दे सकती है। क्षेत्रीय सिनेमा की भूमिका यहां विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। भारत एक ही सांस्कृतिक परिदृश्य नहीं है, बल्कि असंख्य सांस्कृतिक परंपराओं का विशाल संगम है। हर क्षेत्र के अपने त्योहार, लोकगीत, भोजन, हस्तशिल्प और रीति-रिवाज हैं। पंजाब की लोहड़ी, केरल का ओणम, तमिलनाडु का पोंगल, असम का बिहू, महाराष्ट्र का गणेश उत्सव और देश के अनेक अन्य क्षेत्रीय पर्व कहानी कहने के लिए समृद्ध सामग्री उपलब्ध कराते हैं।

डिजिटल युग सांस्कृतिक कहानियों के लिए नए अवसर भी पैदा कर रहा है। डिजिटल प्लेटफॉर्म केवल सिनेमाघरों की सीमाओं तक बंधे नहीं हैं। किसी एक क्षेत्र की कहानी देश और दुनिया के दूसरे हिस्सों के दर्शकों तक पहुंच सकती है। किसी दूसरे प्रदेश के दर्शक के लिए अपरिचित त्योहार भी एक रोचक सांस्कृतिक अनुभव बन सकता है।

युवा पीढ़ी को भी परंपराओं से पूरी तरह कटा हुआ मान लेना उचित नहीं है। युवा संस्कृति में रुचि ले सकते हैं, बशर्ते उसे आधुनिक, प्रामाणिक और रोचक तरीके से प्रस्तुत किया जाए। समस्या शायद रुचि की कमी नहीं, बल्कि सार्थक प्रस्तुति की कमी है। स्कूल, परिवार और सांस्कृतिक संस्थाएं भी सिनेमा की भूमिका को मजबूत कर सकती हैं। बच्चों को केवल यह जानना पर्याप्त नहीं कि कोई त्योहार कैसे मनाया जाता है; उन्हें यह भी समझना चाहिए कि वह क्यों मनाया जाता है। त्योहारों से जुड़ी कहानियों, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और सामाजिक मूल्यों को समझने से उत्सव केवल एक आयोजन न रहकर सांस्कृतिक शिक्षा का माध्यम बन सकता है। सोशल मीडिया ने सांस्कृतिक अभिव्यक्ति को एक नया मंच दिया है। जिन त्योहारों को मुख्यधारा के सिनेमा में कम स्थान मिलता है, वे छोटे वीडियो, तस्वीरों, डॉक्यूमेंट्री और स्वतंत्र रचनाकारों के माध्यम से लाखों लोगों तक पहुंच सकते हैं। सामान्य लोग भी अपनी परंपराओं के कथाकार बन सकते हैं। सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का यह लोकतंत्रीकरण सकारात्मक परिवर्तन है। फिर भी मुख्यधारा के सिनेमा की जिम्मेदारी महत्वपूर्ण बनी रहती है, क्योंकि लोकप्रिय फिल्में भाषा, फैशन, व्यवहार और सामाजिक कल्पना को प्रभावित करती हैं। जो चीज पर्दे पर बार-बार दिखाई देती है, वह परिचित बन जाती है; जो धीरे-धीरे पर्दे से गायब हो जाती है, वह सार्वजनिक चेतना में भी कम दिखाई देने लगती है। इसलिए सिनेमा की जिम्मेदारी दोहरी है। उसे समाज को वैसा ही दिखाना चाहिए जैसा वह है, लेकिन साथ ही समाज को उन चीजों की याद भी दिलानी चाहिए जिन्हें वह भूलने के कगार पर है। सिनेमा में त्योहारों की कम होती उपस्थिति अपने आप में कोई संकट नहीं है। संस्कृति केवल फिल्मों पर निर्भर नहीं है। त्योहार घरों, समुदायों, मंदिरों, मस्जिदों, चर्चों, गुरुद्वारों, गलियों और सार्वजनिक स्थानों पर जीवित रहेंगे। लेकिन जब सिनेमा सांस्कृतिक कहानियां सुनाना बंद कर देता है, तो सांस्कृतिक स्मृति का एक महत्वपूर्ण माध्यम कमजोर जरूर हो जाता है। इसका समाधान यह नहीं है कि हर फिल्म में जबरन कोई त्योहार का दृश्य शामिल किया जाए।

पद्मावती पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों का मानसरोवर फायर स्टेशन का शैक्षणिक भ्रमण

जयपुर. शाबाश इंडिया

महावीर दिगंबर जैन शिक्षा परिषद् के तत्वावधान में संचालित पद्मावती पब्लिक स्कूल, मानसरोवर के विद्यार्थियों ने मानसरोवर फायर स्टेशन का शैक्षणिक भ्रमण किया। भ्रमण का उद्देश्य विद्यार्थियों को अग्नि सुरक्षा, आपातकालीन परिस्थितियों में बरती जाने वाली सावधानियों तथा अग्निशमन विभाग की कार्यप्रणाली की व्यावहारिक जानकारी प्रदान करना था। भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों ने अग्निशमन वाहनों, विभिन्न उपकरणों एवं सुरक्षा साधनों का निकट से अवलोकन किया। अग्निशमन कर्मियों ने विद्यार्थियों को आग लगने की स्थिति में अपनाए जाने वाले सुरक्षा उपायों, आपातकालीन परिस्थितियों में शांत रहने तथा सुरक्षित रूप से बाहर निकलने के तरीकों की महत्वपूर्ण जानकारी दी। विद्यार्थियों ने अग्निशमन कर्मियों से विभिन्न प्रश्न पूछे और अग्निशमन विभाग की कार्यप्रणाली को समझा। इस दौरान विद्यार्थियों को आग से बचाव तथा आपात स्थिति में बरती जाने वाली सावधानियों की व्यावहारिक जानकारी भी मिली। यह शैक्षणिक भ्रमण विद्यार्थियों के लिए ज्ञानवर्धक, रोचक एवं प्रेरणादायक रहा। विद्यालय प्रबंधन ने मानसरोवर फायर स्टेशन के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि अग्निशमन कर्मियों द्वारा विद्यार्थियों को अग्नि सुरक्षा के प्रति जागरूक करने तथा व्यावहारिक जानकारी देने से यह शैक्षणिक भ्रमण सार्थक एवं उपयोगी बना।

विश्व वरिष्ठ नागरिक दिवस पर आरबीएल बैंक, टोंक रोड शाखा में वरिष्ठ नागरिक सम्मान समारोह

महावीर इंटरनेशनल ग्रेटर जयपुर के वरिष्ठ सदस्यों का हुआ विशेष सम्मान

जयपुर. शाबाश इंडिया

विश्व वरिष्ठ नागरिक दिवस के अवसर पर आरबीएल बैंक, टोंक रोड शाखा में वरिष्ठ नागरिक सम्मान समारोह का गरिमापूर्ण आयोजन किया गया। कार्यक्रम में वरिष्ठ नागरिकों के प्रति सम्मान एवं कृतज्ञता व्यक्त करते हुए उनके अनुभव, ज्ञान और समाज में योगदान को सराहा गया। कार्यक्रम में महावीर इंटरनेशनल ग्रेटर जयपुर के पदाधिकारियों एवं सदस्यों का विशेष सहयोग रहा। इस अवसर पर संस्था के वरिष्ठ सदस्यों का सम्मान किया गया तथा बैंकिंग एवं वित्तीय सुरक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी साझा की गई। कार्यक्रम में आरबीएल बैंक, टोंक रोड शाखा के शाखा प्रबंधक श्री समीर सिंह चौहान, उप शाखा प्रबंधक श्री लकी शर्मा, रिलेशनशिप मैनेजर श्री मोहित नेगी एवं बैंक का समस्त स्टाफ उपस्थित रहा। महावीर इंटरनेशनल ग्रेटर जयपुर की ओर से अध्यक्ष श्री राजेश बडजात्या, सचिव श्री धनु कुमार जैन, संयुक्त सचिव श्री सुनील बज, कोषाध्यक्ष सीए वीर कुमार जैन, श्री महेंद्र छाबड़ा, श्री परेश पाटनी, श्रीमती सुशीला बड़जात्या, श्रीमती सुमित्रा जैन, श्री मोहन लाल गंगवाल, डॉ. नमोकर जैन, डॉ. इंद्र कुमार जैन, श्री विनोद बड़जात्या, श्री विजय पांड्या, श्रीमती सीमा बड़जात्या, श्रीमती इंदु जैन एवं श्रीमती वीणा जैन सहित संस्था के अन्य पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित रहे। इस अवसर पर आरबीएल बैंक की ओर से वरिष्ठ नागरिकों के लिए उपलब्ध विभिन्न बैंकिंग एवं निवेश सुविधाओं की जानकारी दी गई। विशेष रूप से फिक्स्ड डिपॉजिट पर आकर्षक ब्याज दरों, अधिकतम 7.20 प्रतिशत प्रतिवर्ष तक, तथा सेविंग्स अकाउंट में लागू स्लैब के अनुसार 3.00 प्रतिशत से 6.00 प्रतिशत प्रतिवर्ष तक ब्याज की जानकारी साझा की गई। बैंक अधिकारियों ने वरिष्ठ नागरिकों की आवश्यकताओं के अनुरूप सुरक्षित निवेश एवं बेहतर बैंकिंग सुविधाओं के संबंध में भी मार्गदर्शन प्रदान किया। श्री राजेश बडजात्या ने कहा कि वरिष्ठ नागरिक समाज की अमूल्य धरोहर हैं। उनका अनुभव, मार्गदर्शन और जीवन मूल्यों की सीख आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत है। वरिष्ठ नागरिकों के सम्मान के साथ-साथ उनकी वित्तीय सुरक्षा एवं सुविधाओं के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए इस प्रकार के आयोजन अत्यंत उपयोगी हैं। उन्होंने आरबीएल बैंक द्वारा आयोजित इस आत्मीय एवं सार्थक कार्यक्रम के लिए बैंक प्रबंधन एवं समस्त स्टाफ का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का उद्देश्य वरिष्ठ नागरिकों के प्रति सम्मान एवं कृतज्ञता व्यक्त करने के साथ-साथ उन्हें सुरक्षित निवेश, बेहतर बैंकिंग सुविधाओं एवं वित्तीय सुरक्षा के प्रति जागरूक करना रहा। कार्यक्रम सौहार्दपूर्ण एवं आत्मीय वातावरण में संपन्न हुआ।

संस्कारों की पाठशाला के प्रति बच्चों में बढ़ रही जागरूकता

कुचामन सिटी. शाबाश इंडिया। 1008 भगवान महावीर दिगंबर जैन मंदिर, डीडवाना रोड पर प्रत्येक शुक्रवार एवं शनिवार को रात्रि 7 से 9 बजे तक ''संस्कारों की पाठशाला'' का आयोजन किया जा रहा है। इसमें करीब 25 बच्चों को सामाजिक, धार्मिक, नैतिक एवं संस्कारयुक्त जीवन का पाठ पढ़ाया जा रहा है। पाठशाला में रेखा विनोद पहाड़िया, नीलम काला, प्रीति, आरती एवं पूनम पाटोदी द्वारा बच्चों को माता-पिता, गुरुजनों एवं बड़ों का सम्मान करने तथा उनकी आज्ञा का पालन करने की प्रेरणा दी जा रही है। साथ ही बच्चों को मोबाइल एवं टीवी का कम से कम उपयोग करने तथा पढ़ाई पर पूरा ध्यान केंद्रित करने के लिए जागरूक किया जा रहा है। बच्चों को जल संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण एवं प्रकृति के प्रति अपनी जिम्मेदारी का महत्व भी समझाया जाता है। भारतीय शाश्वत संस्कृति एवं संस्कारों को जीवन में अपनाने, पूजा-पाठ, व्रत-उपवास तथा सदाचार के माध्यम से अनुशासित एवं संस्कारित जीवन जीने की प्रेरणा दी जा रही है। पाठशाला में बच्चों को आधुनिकता के साथ अपनी समृद्ध भारतीय संस्कृति एवं परंपराओं से जुड़े रहने का संदेश दिया जाता है। बच्चों के साथ-साथ अभिभावकों की जागरूकता एवं सहभागिता भी सराहनीय है। संस्कारवान बालक ही संस्कारवान समाज और सशक्त राष्ट्र का निर्माण करते हैं। संस्कारों की यह पाठशाला बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण की दिशा में एक सराहनीय एवं अनुकरणीय प्रयास है। -**सुभाष पहाड़िया**

दाम्पत्य जीवन में सहनशीलता और सामंजस्य जरूरी : अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज

पुष्पगिरी सोनकच्छ. शाबाश इंडिया

परम पूज्य पुष्पगिरी तीर्थ प्रणेता गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागर महाराज के सानिध्य में अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज एवं उपाध्याय पियूष सागरजी महाराज ससंघ वषायोग के लिए पुष्पगिरी तीर्थ पर विराजमान हैं। उनके सानिध्य में विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। गुरुभक्तों को संबोधित करते हुए आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज ने कहा कि किसी ने पूछा कि संत बनूं या संसार बसाऊं? हमने कहा कि सहन करने की शक्ति हो तो संत बनो और धन-दौलत, संपत्ति तथा जिम्मेदारियां उठाने का सामर्थ्य हो तो संसार बसाओ। संयम और मन को साध सकें तो इससे श्रेष्ठ मार्ग कोई नहीं है। अन्यथा गृहस्थ जीवन में प्रवेश कर सहनशीलता, सामंजस्य और तालमेल बनाए रखना जरूरी है। उन्होंने कहा कि बात-बात पर बहस करना, अपनी बात को सही साबित करना, एक-दूसरे को नीचा दिखाना और पुराने विषयों को बार-बार उठाना अच्छे दाम्पत्य जीवन के लक्षण नहीं हैं। पति-पत्नी का रिश्ता जीतने के लिए नहीं, निभाने के लिए होता है। दोनों को एक-दूसरे का सहयोगी और सहारा बनकर अंतिम सांस तक साथ निभाना चाहिए। उन्होंने कहा कि गृहस्थ जीवन में प्रेम और सामंजस्य जरूरी है। इसी संदर्भ में उन्होंने हास्यपूर्ण ढंग से कहा कि जब पत्नी कहती है, ''खाना खा लो, फिर आपसे कुछ बात करनी है'', तो अच्छे-खासे आदमी की भी भूख मर जाती है। प्रचार-प्रसार संयोजक नरेंद्र अजमेरा एवं पियूष कासलीवाल, औरंगाबाद ने यह जानकारी दी।

राघौगढ़ में श्रमण धारा प्रवचन माला

वर्तमान में बेटा अपने माता-पिता के अंतिम संस्कार में मुखाग्नि देने का अधिकार भी भूल गया : मुनि श्रमण सागर

राघौगढ़. शाबाश इंडिया। विद्या समय रत्न, महान तपस्वी, ओजस्वी वक्ता एवं बुंदेली महाकवि मुनि श्रमण सागरजी महाराज ने राघौगढ़ के विद्यासागर सभागार में मंगल प्रवचन करते हुए कहा कि संस्कारों के अभाव में युवा पीढ़ी अपने वृद्ध माता-पिता की सेवा करने के बजाय महानगरों एवं विदेशों में नौकरी कर धन कमाने में लग रही है। मुनिराज ने कहा कि माता-पिता अपने बच्चों को अच्छी से अच्छी शिक्षा देकर उन्हें योग्य बनाते हैं, लेकिन धन कमाने की दौड़ में कई युवा भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों को भूलकर माता-पिता से भी दूर हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि बच्चों को बचपन से भारतीय संस्कार देने के बजाय केवल आधुनिक शिक्षा पर जोर देने से वे अपनी संस्कृति और पारिवारिक मूल्यों से दूर होते जा रहे हैं। महानगरों में नौकरी करने के दौरान कई युवा वहीं प्रेम विवाह कर लेते हैं, जिससे माता-पिता को कई बार भावनात्मक पीड़ा का सामना करना पड़ता है। मुनिराज ने कहा कि पहले शुभ विवाह के बाद पति-पत्नी में प्रेम विकसित होता था, जबकि आज कई बार प्रेम विवाह के बाद भी संबंध अधिक समय तक स्थायी नहीं रह पाते और वैवाहिक संबंध विच्छेद तक पहुंच जाते हैं। उन्होंने धर्मसभा में समाजजनों का आह्वान करते हुए कहा कि अपने बच्चों के साथ-साथ नगर के ऐसे होनहार बालक-बालिकाओं की शिक्षा में भी सहयोग करें, जिनकी आर्थिक स्थिति कमजोर है, लेकिन वे प्रतिभावान हैं। उन्होंने कहा कि जिन जरूरतमंद विद्यार्थियों की शिक्षा में समाज सहयोग करता है, वे भविष्य में उस उपकार को याद रखते हैं और कठिन समय में अपने सहयोगियों का सहारा बन सकते हैं। मुनि श्रमण सागरजी महाराज ने युवा पीढ़ी से भारतीय संस्कारों का पालन करने तथा माता-पिता के प्रति अपने कर्तव्यों को समझने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि वर्तमान में ऐसी स्थिति भी देखने को मिल रही है कि माता-पिता के अंतिम संस्कार के लिए सगे बेटे के पास समय नहीं है। महानगरों या विदेशों में रहकर मोबाइल पर वीडियो कॉल के माध्यम से अंतिम संस्कार देखना और इसे अपना कर्तव्य पूरा करना मान लेना चिंताजनक स्थिति है। उन्होंने युवाओं से माता-पिता के प्रति संवेदनशील रहने और उनके अंतिम समय में उनके साथ खड़े रहने की अपील की। उल्लेखनीय है कि धर्मनगरी राघौगढ़ में आचार्य विद्यासागरजी महाराज के परम प्रभावक शिष्य मुनि श्रमण सागरजी एवं मुनि ओंकार सागरजी महाराज का नवाचार्य समय सागरजी महाराज के आदेश से पावन चातुर्मास चल रहा है। चातुर्मास के दौरान राघौगढ़ नगर में धार्मिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियों का आयोजन हो रहा है। प्रतिदिन प्रातः 6:45 बजे से मुनि श्रमण सागरजी महाराज द्वारा युवक-युवतियों के लिए मोटिवेशन क्लास आयोजित की जा रही है, जिसमें उन्हें जीवन में उन्नति करने, सकारात्मक सोच रखने और निराशा से बचने के संबंध में मार्गदर्शन दिया जाता है। दोपहर 3 बजे से महिलाओं की क्लास मुनि श्रमण सागरजी महाराज के सानिध्य में तथा 4 बजे से मुनि ओंकार सागरजी महाराज के सानिध्य में आयोजित की जा रही है।

गणिनी आर्यिका श्री सुभूषणमति माताजी ने कहा...

बच्चों को सुविधाओं के साथ संस्कार भी देने चाहिए

अजीत कोठिया डडूका, बांसवाड़ा की रिपोर्ट

बांसवाड़ा। श्री अडिन्दा पार्श्वनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र में विराजमान चर्चा शिरोमणि गणिनी आर्यिका श्री सुभूषणमति माताजी ने श्रावकों को संबोधित करते हुए कहा कि संसार में प्रति क्षण जन्म-मरण का क्रम चलता रहता है। जन्म और मरण को कोई रोक नहीं सकता। यह अविरल क्रम निरंतर चलता रहता है। ऐसे में परिवार में जैनत्व का वातावरण बनाए रखना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि बच्चों को सुविधाओं के साथ संस्कार भी देने चाहिए। जो स्वयं संस्कारित होता है, वही दूसरों को संस्कार दे सकता है। बच्चों में यह गर्व होना चाहिए कि वे जैन हैं। उन्होंने कहा कि जैन समाज की जनसंख्या कम हो रही है। एक ओर साधु-साध्वियों की संख्या बढ़ रही है, वहीं श्रावकों की संख्या कम होना चिंता का विषय है। इस असंतुलन को रोकना आवश्यक है। माताजी ने कहा कि नदी के बहाव के प्रतिकूल दिशा में तैरना कठिन होता है। इसमें अधिक शक्ति, श्रम और समय लगता है। आज के परिवेश में साधु भी प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच अपने वैराग्य को मजबूत बनाए हुए हैं। उन्होंने कहा कि आपने मकान तो बना दिया, लेकिन एक जैन श्रावक भी जरूर बनाएं। साधु और श्रावक दोनों को मिलकर जैन धर्म की परंपराओं और संस्कारों को बचाए रखना है। स्वयं संस्कारवान बनें और अपनी जीवनचर्या के माध्यम से अगली पीढ़ी में जैनत्व के संस्कार रोपित करें। गणिनी आर्यिका श्री सुभूषणमति माताजी ने कहा कि जैन समाज आपस में बंटा हुआ है। हमें अपनी एकता और शक्ति का अहसास करना होगा। एकजुट होकर ही समाज को मजबूत बनाया जा सकता है। प्रवचन के दौरान माताजी ने जीवन जीने की शैली और संस्कारों का महत्व बताते हुए श्रद्धालुओं को मार्गदर्शन दिया। प्रवचन से श्रद्धालु भावविभोर हो उठे। अंत में भक्तों ने जयकारों के साथ गुरु चरणों में वंदामी-वंदामी-वंदामी निवेदित किया और अपने गंतव्य की ओर प्रस्थान किया। यह जानकारी अंजली जैन, खतौली, मुजफ्फरनगर ने दी।

सुहाग दशमी पर्व पर सामूहिक पूजन एवं गेम्स का आयोजन

नसीराबाद. शाबाश इंडिया। श्री दिगंबर जैन महिला महासमिति, नसीराबाद के तत्वावधान में सुहाग दशमी पर्व के अवसर पर सामूहिक पूजन एवं विभिन्न खेलों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम अध्यक्ष, मंत्री, कोषाध्यक्ष एवं सुरभि सेठी के नेतृत्व में आयोजित हुआ। इस अवसर पर उपवास करने वाली सभी महिलाओं को बड़े मंदिरजी में सामूहिक पूजन करवाया गया। महिलाओं ने बड़े ही भक्ति भाव के साथ पूजा-अर्चना की तथा भक्ति नृत्य के साथ उत्साहपूर्वक पूजन में सहभागिता की। महिला महासमिति की ओर से दिन में विभिन्न मनोरंजक खेलों एवं अन्य गतिविधियों का भी आयोजन किया गया, जिसमें महिलाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान सभी पदाधिकारियों ने उपवास कर रही महिलाओं के निर्विघ्न उपवास की मंगल कामना की। पर्व के अवसर पर महिलाओं में विशेष उत्साह एवं भक्ति का वातावरण रहा।

माया ने रावण जैसे सामर्थ्यवान का भी विवेक छीन लिया, एक छल ने बदल दी जीवन की पूरी दिशा : युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी

जिस दिन मनुष्य स्वयं को छलना छोड़ दे, उसी दिन भीतर की यात्रा सही दिशा पकड़ लेती है

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया। जिसके ज्ञान की प्रशंसा विरोधी पक्ष तक करता था, जिसके सामर्थ्य के आगे दिव्य शक्तियां भी हतबल बताई गईं और जो राजनीति की बारीकियों का प्रखर जानकार था, वही रावण माया के एक क्षण में अपना वास्तविक स्वरूप छिपाकर साधु के वेश में हाथ में कटोरा लिए सीता के सामने पहुंच गया। सामर्थ्य कम नहीं हुआ था, ज्ञान भी समाप्त नहीं हुआ था, लेकिन विवेक पर पड़े माया के आवरण ने जीवन की दिशा बदल दी। एक भूल इतनी भारी पड़ी कि तीर्थंकरत्व जैसी उच्च आध्यात्मिक संभावना वाला जीव भी अधोगति के कर्मबंधन की ओर मुड़ गया। यह उद्बोधन श्रमणसंघीय युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी ने शनिवार को शांतिभवन में आयोजित विशाल धर्मसभा में व्यक्त किया। रावण के जीवन को माया की शक्ति का बड़ा उदाहरण बताते हुए युवाचार्यश्री ने कहा कि वह केवल बलशाली राजा नहीं था। साम, दाम, दंड और भेद सहित राजनीति के विविध उपायों पर उसकी पकड़ थी और उसकी दूरदृष्टि ऐसी थी कि मानवहित से जुड़ी बड़ी कल्पनाएं भी उसके चिंतन में थीं। रामायण के प्रसंग का संदर्भ देते हुए उन्होंने कहा कि भगवान राम ने भी लक्ष्मण को उससे राजनीति के सूत्र सीखने के लिए प्रेरित किया था। देह सहित मनुष्य

स्वर्ग तक पहुंच सके, इसके लिए सीढ़ियां बनाने की कल्पना भी उसके सामर्थ्य और सोच से जोड़ी जाती है। इतनी ऊंचाई पर खड़ा व्यक्ति जब माया के वशीभूत हुआ तो वही शक्ति उसके उत्थान के बजाय पतन की दिशा में लग गई। युवाचार्यश्री ने कहा कि यहीं जीवन का बड़ा सत्य छिपा है। मनुष्य को गिराने के लिए हमेशा सामर्थ्य की कमी जिम्मेदार नहीं होती, कई बार सामर्थ्य होते हुए विवेक की एक चूक ही पर्याप्त होती है। जिसने अनेक शक्तियों को अपने प्रभाव में कर लिया, वही अपनी इच्छा के वश में होकर स्वयं की पहचान छिपाने लगा। माया की मार यही है कि वह व्यक्ति को पहले वास्तविकता से दूर करती है और फिर उसके गलत निर्णय को भी सही साबित करने के तर्क दे देती है। राजनीति के वर्तमान स्वरूप पर कटाक्ष करते हुए उन्होंने कहा कि राजनीति मूल रूप से नीति, व्यवस्था और जनकल्याण का माध्यम है, लेकिन स्वार्थ, पदलिप्सा और अहंकार ने इस शब्द की गरिमा को चोट पहुंचाई है। जब राजनीति समाजहित के स्थान पर अपनी कुर्सी सुरक्षित रखने, नाम बढ़ाने, वर्चस्व स्थापित करने और केवल अपनी बात मनवाने का साधन बन जाए तो नीति पीछे छूट जाती है। यह विकृति केवल देश की राजनीति तक सीमित नहीं रहती; समाज, संस्था और संघ में भी सेवा की जगह अपना प्रभाव बढ़ाना लक्ष्य बन जाए तो वही प्रवृत्ति वहां भी जड़ें जमा लेती है। उन्होंने कहा कि माया की असली पहचान किसी को केवल झूठ बोलकर छल देना नहीं, बल्कि जो जैसा है, उसे वैसा स्वीकार न करना है। गलती अपनी हो और दोष दूसरे पर डाल दिया जाए, गुण किसी और का हो और उसका श्रेय स्वयं लेने की कोशिश की जाए, कमजोरी सामने आने लगे तो उसे छिपाने के लिए नया आवरण खड़ा कर दिया जाए—यहीं से कपट का जन्म होता है। एक आवरण को बचाने के लिए दूसरा और दूसरे को बचाने के लिए तीसरा मुखौटा लगाना पड़े तो जीवन सरल नहीं, बल्कि बोझिल होता चला जाता है। अहंकार भी माया का रास्ता आसान करता है। धन, ज्ञान, कुल, रूप, पद, प्रतिष्ठा या सामर्थ्य का मद मनुष्य को धीरे-धीरे अपने वास्तविक स्वरूप से दूर कर देता है। ''मैं बड़ा हूं, मैं श्रेष्ठ हूं, मैं अधिक योग्य हूं'' का भाव जितना गहराता है, आत्मस्वरूप उतना ही पर्दों के पीछे चला जाता है। प्रशंसा मिलते ही फूल जाना और आलोचना होते ही भीतर तक आहत हो जाना इसी बात का संकेत है कि व्यक्ति ने अपनी पहचान आत्मा से अधिक नाम और प्रतिष्ठा में खोज ली है। जहां अहंकार को पोषण मिलता है, वहां अपने दिखाई देते हैं और जहां उस पर चोट लगती है, वहीं से विरोध और शत्रुता जन्म लेने लगती है।

माता-पिता हमारे पहले गुरु, संसार और जीवन की सबसे बड़ी शक्ति होते हैं : मुनि श्री प्रणुतसागर जी महाराज

अहमदाबाद. शाबाश इंडिया। परम पूज्य प्रसन्न मनः मुनि श्री 108 प्रणुतसागर जी महाराज ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि माता-पिता केवल हमारे जन्मदाता नहीं, बल्कि हमारे पहले गुरु, पहला संसार और जीवन की सबसे बड़ी शक्ति होते हैं। मां हमारी खुशी में अपनी खुशी खोजती है, जबकि पिता हमारी जरूरतों के लिए अपनी इच्छाओं को चुपचाप पीछे कर देते हैं। हमारी एक मुस्कान के लिए उन्होंने न जाने कितनी चिंताएं छिपाईं और हमारे एक कदम आगे बढ़ने के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया। उन्होंने कहा कि माता-पिता के चरणों में केवल चरण नहीं, बल्कि त्याग, तपस्या, प्रेम, संस्कार और आशीर्वाद का संसार समाया होता है। माता-पिता का सम्मान करना हमारे संस्कारों का मूल आधार है। इसी भाव को जीवन में उतारने के उद्देश्य से परम पूज्य मुनि श्री प्रणुतसागर जी महाराज के मंगल सान्निध्य में 23 अगस्त, रविवार को दोपहर 1 बजे माता-पिता पद पूजा का आयोजन किया जाएगा। 55 वर्ष से अधिक आयु के माता-पिता के चरणों की पूजा का यह विशेष अवसर रहेगा। श्रद्धालु उन हाथों और चरणों के प्रति सम्मान एवं कृतज्ञता अर्पित करेंगे, जिन्होंने जीवनभर उनका साथ दिया। कार्यक्रम कच्छ कड़वा पाटीदार समाज वाड़ी, श्वेतांबर जैन मंदिर के पास, अंबिका नगर, अहमदाबाद में होगा। कार्यक्रम के बाद समाज के सभी लोगों के लिए भोजन की व्यवस्था रहेगी। मुख्य पुण्यार्जक परिवार में श्री पुष्पदंतभाई बाबुलाल शाह, श्रीमती छायाबेन पुष्पदंतभाई शाह, कु. धीया, श्री मयंक पुष्पदंतभाई शाह, श्रीमती वैदेही मयंक शाह एवं चि. समर्थ शामिल हैं। आयोजक प्रसन्न मनः चातुर्मास कमेटी, अहमदाबाद ने अधिक से अधिक लोगों से सहभागी बनकर माता-पिता के चरणों में श्रद्धा, सम्मान एवं कृतज्ञता अर्पित करने का आह्वान किया। **श्री अभिषेक अशोक पाटील कार्याध्यक्ष, अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवा परिषद्, कोल्हापुर**

रोटरी क्लब वाराणसी वृंदा के रोटरी बाजार में सजे 63 स्टॉल, महिलाओं की प्रतिभा और स्वावलंबन को मिला मंच

रोटरी बाजार में दिखी भारतीय हस्तशिल्प की विविधता, जनकल्याण के साथ महिला आत्मनिर्भरता का संदेश

वाराणसी. शाबाश इंडिया

रोटरी क्लब वाराणसी वृंदा द्वारा होटल सूर्या कैंटोनमेंट में रोटरी बाजार का आयोजन किया गया। इस अवसर पर लखनऊ, प्रयागराज, कोलकाता, मिर्जापुर, इंदौर, भदोही, गाजीपुर एवं वाराणसी सहित विभिन्न स्थानों से लगभग 63 स्टॉल लगाए गए। इन स्टॉलों में लखनऊ की प्रसिद्ध चिकनकारी, बनारस की मीनाकारी, जरदोजी वर्क, सिल्क की साड़ियां, भदोही के कालीन, होम डेकोर की वस्तुएं, भगवान के वस्त्र, राखियां, आर्टिफिशियल ज्वैलरी एवं सिल्वर ज्वैलरी प्रमुख आकर्षण रहे। इसके साथ ही गाजीपुर की ऑर्गेनिक खाद्य सामग्री, एक्सपोर्ट क्वालिटी की फर्निशिंग सामग्री, विभिन्न राज्यों की आकर्षक ड्रेसेज, फुटवियर एवं बैग के स्टॉल भी लोगों के आकर्षण का केंद्र रहे। आयोजन का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने के लिए मंच उपलब्ध कराना तथा उन्हें आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रोत्साहित करना था। साथ ही, आयोजन से प्राप्त सहयोग के माध्यम से जरूरतमंद लोगों के निशुल्क मोतियाबिंद ऑपरेशन, असहाय लड़कियों के विवाह तथा गरीब बच्चों की शिक्षा में सहायता करने का लक्ष्य रखा गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि रोटरी मंडल 3120 की डिस्ट्रिक्ट गवर्नर रोटेरियन पूनम गुलाटी थीं। कार्यक्रम की अध्यक्षता रोटेरियन राधा अग्रवाल ने की। कार्यक्रम का संयोजन रोटेरियन अलका पोद्दार, रोटेरियन पूनम अग्रवाल, रोटेरियन रचना जैन एवं रोटेरियन मीना सिंह ने किया। इस अवसर पर रोटेरियन श्वेता खरे, रोटेरियन पूर्णिमा सिंह, रोटेरियन संगीता अग्रवाल, रोटेरियन मीना सिंह, रोटेरियन ललिता मोदी सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम में लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और विभिन्न स्टॉलों से खरीदारी कर इस सामाजिक एवं जनकल्याणकारी पहल को अपना सहयोग प्रदान किया। **रिपोर्टः संतोष कुमार सिंह**

छोटा बनने की कोशिश करो, जिंदगी तुम्हें बड़ा बना देगीः आचार्य पुलकसागर

बड़ा नहीं, छोटा बनकर जीएंगे तो खुशियां सदा हमारे घर में वास करेंगी

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया। राष्ट्रसंत मनोज्ञाचार्य पुलकसागर महाराज ने कहा कि दुनिया में सबसे बड़ा अभागा वह नहीं, जिसके पास धन-संपदा नहीं है, बल्कि वह है, जिस पर परमात्मा की कृपा नहीं है। जिसकी जुबान पर प्रभु का नाम नहीं आता, उसका जीवन व्यर्थ है। परमात्मा की कृपा पानी है तो छोटा बनकर जीना सीखिए। छोटा बनने की कोशिश करो, जिंदगी तुम्हें बड़ा बना देगी। वे शनिवार को श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर ट्रस्ट, मैन सेक्टर शास्त्रीनगर के तत्वावधान में सकल दिगंबर जैन समाज की ओर से चित्रकूटधाम में आयोजित ज्ञान गंगा महोत्सव में प्रवचन दे रहे थे। भीलवाड़ा में पहली बार चातुर्मास कर रहे आचार्यश्री ने अहंकार त्यागकर विनम्रता अपनाने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि बड़ा बनकर खारा होने से अच्छा है छोटा बनकर मीठे रहो। व्यक्ति धन, शोहरत, यश या बुद्धि से बड़ा नहीं होता, बल्कि जो विनम्र होकर परमात्मा और गुरु के चरणों में रहता है, वही वास्तव में बड़ा होता है। परिवार में भी बड़ा बनने के बजाय छोटा बनकर रहेंगे तो खुशियां घर में बनी रहेंगी। जो अकड़ेगा, वह मिट जाएगा और जो झुकेगा, वह ऊपर उठेगा। आचार्यश्री ने कहा कि बड़ों के चरण स्पर्श करने से उनका नहीं, बल्कि अपना सम्मान बढ़ता है। अहंकार की अकड़ कम हो जाए तो जीवन सुखमय बन जाता है। उन्होंने कहा कि जिस पर किसी का राई बराबर भी उपकार हो, उसे जीवनभर याद रखना चाहिए, जबकि स्वयं किए गए बड़े से बड़े उपकार को भूल जाना चाहिए। उन्होंने श्रद्धालुओं से कहा कि मंदिर में भगवान के सामने केवल धन-दौलत न मांगें, बल्कि परमात्मा को ही मांग लें। जब गुरु और परमात्मा की कृपा मिलती है तो जीवन की झोली खुशियों से कभी खाली नहीं रहती।

वार्ड 31 में गरमाया चुनावी माहौल, जय कुमार जैन के समर्थन में जुटे कार्यकर्ता

विधायक प्रत्याशी अभिषेक चौधरी और प्रभारी प्रियकांत गौड़ की मौजूदगी में कार्यकर्ताओं में दिखा उत्साह, संगठन मजबूती पर जोर

जयपुर. शाबाश इंडिया

नगर निगम चुनाव को लेकर वार्ड नंबर 31 में राजनीतिक गतिविधियां तेज होती दिखाई दे रही हैं। शनिवार को वैशाली नगर ब्लॉक कांग्रेस कमेटी की ओर से वार्ड क्षेत्र में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता, स्थानीय नागरिक एवं मतदाता उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान कांग्रेस पार्षद पद के दावेदार जय कुमार जैन के समर्थन में कार्यकर्ताओं और स्थानीय लोगों की मौजूदगी रही। कार्यक्रम में झोटवाड़ा विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस प्रत्याशी अभिषेक चौधरी, राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी द्वारा नगर निगम चुनाव में उम्मीदवार चयन के लिए झोटवाड़ा विधानसभा क्षेत्र में नियुक्त प्रभारी प्रियकांत गौड़, वैशाली नगर ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष उमराव यादव, वैशाली नगर कांग्रेस मंडल अध्यक्ष मुकेश कड़वा, वार्ड 31 के वरिष्ठ कांग्रेस कार्यकर्ता सुरेंद्र गुप्ता, राजस्थान कांग्रेस अल्पसंख्यक मोर्चा से सिराज अहमद खान, कांग्रेस के पूर्व पार्षद प्रत्याशी मोहित जैन तथा वैशाली नगर ब्लॉक कांग्रेस संगठन मंत्री अनिल वर्मा सहित अन्य कार्यकर्ता उपस्थित रहे। इस दौरान स्थानीय स्तर पर संगठनात्मक गतिविधियों, वार्ड से जुड़े मुद्दों और चुनावी तैयारियों को लेकर कार्यकर्ताओं एवं उपस्थित लोगों के बीच चर्चा हुई। ब्लॉक कांग्रेस कमेटी से जुड़े पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने क्षेत्र में संगठन को मजबूत करने तथा आगामी चुनाव को लेकर चल रही गतिविधियों की जानकारी साझा की। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लोगों की मौजूदगी से वार्ड में कांग्रेस की स्थानीय गतिविधियों को लेकर राजनीतिक हलचल नजर आई। नगर निगम चुनाव की प्रक्रिया के बीच वार्ड नंबर 31 में विभिन्न राजनीतिक दलों और संभावित प्रत्याशियों की गतिविधियां भी बढ़ने लगी हैं। ऐसे में आने वाले दिनों में वार्ड की राजनीतिक

तस्वीर और अधिक स्पष्ट होने की संभावना है। चुनावी प्रक्रिया के दौरान सभी राजनीतिक दलों, प्रत्याशियों एवं समर्थकों के लिए निर्वाचन आयोग द्वारा निर्धारित नियमों और आचार संहिता का पालन करना अनिवार्य है।

ॐ नमो ऋषभाय नमः के किए जाप, चौबीस तीर्थंकरों के गूंजे जयकारे

सौभाग्य दशमी पर जैन मंदिरों में हुए पूजा विधान, महिलाओं ने सौभाग्य की रक्षा के लिए रखे व्रत-उपवास

जयपुर. शाबाश इंडिया

दिगंबर जैन धर्मावलंबियों द्वारा शनिवार को सौभाग्य दशमी मनाई गई। इस अवसर पर महिलाओं ने व्रत-उपवास रखे और शहर के विभिन्न दिगंबर जैन मंदिरों में विशेष पूजा-अर्चना एवं धार्मिक अनुष्ठान किए। राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन ''कोटखावदा'' के अनुसार सौभाग्य दशमी को कलश दशमी, अक्षय फल दशमी तथा सुहाग दशमी के नाम से भी जाना जाता है। श्रावण शुक्ल दशमी के अवसर पर महिलाओं ने अपने सुहाग, बच्चों एवं परिवार की सुख-समृद्धि, पति की दीर्घायु और स्वस्थ जीवन तथा पुत्र रत्न की प्राप्ति की कामना से व्रत एवं उपवास किए। उन्होंने बताया कि दिगंबर जैन मंदिरों में 10 कलशों पर जैन धर्म के 24 तीर्थंकरों की स्थापना कर आदिनाथ भगवान सहित अक्षय निधि सौभाग्य दशमी व्रत की अष्टद्रव्य से पूजा की गई। पूजा के अंत में महिलाओं ने ''ॐ नमो ऋषभाय नमः'' के जाप किए। सांगानेर थाना सर्किल स्थित चित्रकूट कॉलोनी के श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर में आचार्य विशद सागर महाराज ससंघ के सान्निध्य में चल रहे 35 दिवसीय णमोकार विधान के बाद मुनि विशाल सागर महाराज के निर्देशन में श्योपुर, प्रतापनगर निवासी दिव्या बाकलीवाल के नेतृत्व में अक्षय निधि सौभाग्य दशमी व्रत की विशेष पूजा हुई। इस दौरान देव-शास्त्र-गुरु, आदिनाथ भगवान, देहरे वाले चंद्रप्रभु भगवान, शीतलनाथ भगवान, महावीर भगवान, अक्षय निधि सौभाग्य दशमी पूजा एवं कथा तथा निर्वाण क्षेत्र की पूजा की गई। मंत्रोच्चार के साथ 24 तीर्थंकरों को अर्घ्य चढ़ाए गए। पूजा में दिव्या बाकलीवाल, सोनल, अनुश्री, पारुल, तन्वी, प्रियांगिनी, शिवानी, सुरभि, आयुषी एवं निकिता जैन सहित बड़ी संख्या में महिलाएं शामिल हुईं। अंत में 'ॐ नमो ऋषभाय नमः' के 108 जाप किए गए और महाआरती के साथ आयोजन का समापन हुआ। विनोद जैन के अनुसार जनकपुरी के श्री नेमिनाथ दिगंबर जैन मंदिर, सांगानेर के संघीजी दिगंबर जैन मंदिर, तारों की कूट, सूर्य नगर स्थित श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर, श्योपुर के श्री चंद्रप्रभु दिगंबर जैन मंदिर, दुर्गापुरा के श्री दिगंबर जैन मंदिर चंद्रप्रभु तथा सेठी कॉलोनी के श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर में भी महिलाओं ने पूजा-अर्चना के बाद व्रत की कथा का वाचन किया। महाआरती के साथ कार्यक्रम संपन्न हुए। उन्होंने बताया कि सौभाग्य दशमी का व्रत एवं उपवास लगातार 10 वर्षों तक किया जाता है। इसके बाद विधि-विधान से उद्यापन किया जाता है। उद्यापन में 10 उपकरण एवं 10 शास्त्र वितरित किए जाते हैं। व्रत की अवधि में दया और धर्म का पालन करने के साथ मुनियों को आहारदान दिया जाता है। मान्यता है कि इस दिन किए गए तप, दान, पूजा एवं उपवास का फल कभी नष्ट नहीं होता। सौभाग्य दशमी के अवसर पर महिलाओं ने गुलाबी लहरिया साड़ियां पहनकर एवं सोलह श्रृंगार कर विभिन्न चातुर्मास स्थलों पर पहुंचकर आचार्य, मुनियों एवं आर्यिका माताजी के मंगल प्रवचन सुने तथा दर्शन एवं आशीर्वाद प्राप्त किया।

28 अगस्त को रक्षाबंधन एवं श्रेयांसनाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक

विनोद जैन 'कोटखावदा' ने बताया कि शुक्रवार, 28 अगस्त को रक्षाबंधन के साथ जैन धर्म के 11वें तीर्थंकर भगवान श्रेयांसनाथ का मोक्ष कल्याणक दिवस मनाया जाएगा। इस अवसर पर श्रावक जिनवाणी तथा साधु-संतों एवं आर्यिका माताजी की पिच्छिका पर रक्षा सूत्र बांधकर धर्म, जिनवाणी एवं दिगंबर जैन संतों की रक्षा का संकल्प लेंगे। इसी दिन मुनि विष्णुकुमार की भी पूजा की जाएगी। इस अवसर पर दिगंबर जैन संतों के सभी चातुर्मास स्थलों पर विशेष पूजा-अर्चना एवं रक्षाबंधन के धार्मिक आयोजन किए जाएंगे।

विनोद जैन 'कोटखावदा'
प्रदेश महामंत्री, राजस्थान जैन युवा महासभा, जयपुर

अडिग श्रद्धा और मंदिर की मर्यादा ही सच्ची धर्म आराधना का आधार : आचार्यश्री उदारसागर

मुरैना. शाबाश इंडिया। बड़े जैन मंदिर में आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए परम पूज्य आचार्यश्री 108 उदारसागर महाराज ने श्रद्धान के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जैन दर्शन में श्रद्धा को सम्यग्दर्शन का महत्वपूर्ण अंग माना गया है। श्रद्धा केवल किसी व्यक्ति, स्थान या परिस्थिति के प्रति भावनात्मक लगाव नहीं, बल्कि तत्त्वों के यथार्थ स्वरूप पर दृढ़ विश्वास का नाम है। आचार्यश्री ने कहा कि सच्ची श्रद्धा ऐसी होनी चाहिए, जो सुख-दुःख, लाभ-हानि, मान-अपमान तथा अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों में भी डगमगाए नहीं। जिनेन्द्र भगवान के वीतराग स्वरूप और उनके बताए सत्य मार्ग के प्रति हमारा विश्वास दृढ़ एवं अटूट होना चाहिए। उन्होंने कहा कि जिनेन्द्र भगवान की वाणी सत्य, अहिंसा, अनेकांत और आत्मकल्याण का मार्ग दिखाती है। भगवान ने किसी व्यक्ति को अपना अनुयायी बनाने के लिए नहीं, बल्कि प्रत्येक जीव को उसके वास्तविक स्वरूप का बोध कराने के लिए धर्म का उपदेश दिया है। आचार्यश्री ने स्पष्ट किया कि केवल भगवान के सामने सिर झुका देना, मंदिर में दर्शन करना या पूजा-अभिषेक कर लेना ही श्रद्धा की पूर्णता नहीं है। धर्मआराधना का वास्तविक प्रभाव हमारे आचरण में दिखाई देना चाहिए। यदि आराधना के बाद क्रोध कम हो, क्षमा बढ़े, लोभ और अहंकार घटे तथा जीवों के प्रति करुणा उत्पन्न हो, तभी धर्म आत्मा को स्पर्श करता है। उन्होंने कहा कि धर्म भगवान को प्रसन्न करने के लिए नहीं, बल्कि अपने भीतर के भगवान को प्रकट करने के लिए किया जाता है। श्रद्धा के साथ सम्यक ज्ञान और सम्यक आचरण को जीवन में उतारना आवश्यक है।

तृतीय विशाल सुपर फास्ट डाक कांवड़ यात्रा के पोस्टर का हुआ विमोचन

शाबाश इंडिया/अर्पित जैन

भैंसलाना। श्रावण मास के अवसर पर तृतीय विशाल सुपर फास्ट डाक कांवड़ यात्रा के पोस्टर का विमोचन शुक्रवार को युवा संगठन समिति एवं ग्रामीणों द्वारा किया गया। समिति के मनीष प्रजापत एवं सागर प्रजापत ने बताया कि कांवड़ यात्रा के लिए श्रद्धालु शनिवार को भैंसलाना से रवाना होंगे। झुंझुनूं के लोहार्गजी उदयपुर वाटिका से जल भरकर डाक कांवड़ यात्रा के माध्यम से 24 अगस्त, सोमवार को बाजार वाले शिव मंदिर में जलाभिषेक किया जाएगा। कांवड़ यात्रा को लेकर युवाओं एवं श्रद्धालुओं में खासा उत्साह देखा जा रहा है। पोस्टर विमोचन के दौरान समिति पदाधिकारियों ने अधिक से अधिक श्रद्धालुओं से धार्मिक आयोजन में सहभागिता करने का आह्वान किया। इस अवसर पर मदन ऐचरा, कुलदीप मीणा, सोहनदास स्वामी, बलराम जाखड़, शंकर गुर्जर, मोहन जोशी, महेंद्र सांखला, अर्जुन भार्गव, कृष्णगोपाल अग्रवाल, कमल सरावता, राहुल मीणा, अनीश सैनी, संदीप प्रजापत, नवीन मीणा, बलराम प्रजापत, शौर्य काला, हिमांशु काला, दीपक सैन, मोहित गहनोलिया सहित अन्य ग्रामीण एवं युवा मौजूद रहे।

तीर्थराज सम्मेद शिखर की 52 किलोमीटर की परिक्रमा के लिए जयपुर से पहुंचेंगे यात्री

1 अक्टूबर को जयपुर से रवाना होगा 200 यात्रियों का दल, सातवीं बार करेंगे पर्वतराज की परिक्रमा

सम्मेद शिखरजी में 27 किलोमीटर की पदवंदना सहित होंगे विभिन्न धार्मिक आयोजन

राजस्थान जैन युवा महासभा के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन ''कोटखावदा'' ने बताया कि तीर्थराज सम्मेद शिखरजी जैन धर्म का अत्यंत पवित्र सिद्ध क्षेत्र है। जैन मान्यता के अनुसार वर्तमान चौबीसी के 20 तीर्थंकरों सहित असंख्य मुनिराजों ने यहां कर्मों का नाश कर मोक्ष पद प्राप्त किया है। उन्होंने कहा कि तीर्थराज के कण-कण में सिद्धत्व की आभा एवं निर्वाण की ज्योति मानी गई है।

जयपुर. शाबाश इंडिया

जैन धर्म के 20 तीर्थंकरों की निर्वाण भूमि एवं शाश्वत सिद्ध क्षेत्र श्री सम्मेद शिखरजी पर्वत की 52 किलोमीटर की परिक्रमा के लिए जयपुर से विशेष तीर्थयात्रा का आयोजन किया जा रहा है। सिद्धार्थ नगर जयपुर जैन समाज की ओर से आयोजित इस यात्रा में 200 यात्री शामिल होंगे। यात्रा का आयोजन सिद्धार्थ नगर गौरव मुनि श्री 108 विशाल सागर महाराज की पावन प्रेरणा से किया जा रहा है। यात्रा के दौरान तीर्थ वंदना, श्री सम्मेद शिखर विधान एवं पर्वतराज की परिक्रमा सहित विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम आयोजित होंगे। यात्रा के मुख्य संयोजक महावीर रांवका ने बताया कि सातवीं बार पर्वत की परिक्रमा करवाने वाली संस्था श्री विद्यासागर यात्रा संघ, जयपुर के पूर्ण सहयोग से इस वर्ष भी तीर्थराज की परिक्रमा का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि यात्रा दल 1 अक्टूबर को जयपुर से रवाना होगा और 3 अक्टूबर को श्री सम्मेद शिखरजी पर्वत की 27 किलोमीटर की पदवंदना करेगा। 4 अक्टूबर को तलहटी स्थित दिगंबर जैन मंदिर में संगीतमय श्री सम्मेद शिखर पूजा विधान एवं आचार्य विद्यासागर महाराज की महापूजा होगी। 5 अक्टूबर को प्रातः पर्वतराज की पैदल परिक्रमा शुरू होगी। रात्रि विश्राम निमियाघाट दिगंबर जैन मंदिर में होगा। 6 अक्टूबर को मंदिर में अभिषेक, शांतिधारा एवं पूजा-अर्चना के बाद पर्वत परिक्रमा का समापन सायंकाल मधुबन में होगा। राजस्थान जैन युवा महासभा के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन ''कोटखावदा'' ने बताया कि तीर्थराज सम्मेद शिखरजी जैन धर्म का अत्यंत पवित्र सिद्ध क्षेत्र है। जैन मान्यता के अनुसार वर्तमान चौबीसी के 20 तीर्थंकरों सहित असंख्य मुनिराजों ने यहां कर्मों का नाश कर मोक्ष पद प्राप्त किया है। उन्होंने कहा कि तीर्थराज के कण-कण में सिद्धत्व की आभा एवं निर्वाण की ज्योति मानी गई है। उन्होंने बताया कि वर्तमान चौबीसी के द्वितीय तीर्थंकर भगवान अजितनाथ ने सर्वप्रथम इस तीर्थराज से मोक्ष पद प्राप्त किया था। इसके बाद अनेक चक्रवर्तियों एवं आचार्यों ने संघ सहित इस पावन क्षेत्र की वंदना की। यात्रा के मुख्य संरक्षक मनीष चौधरी ने बताया कि आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महामुनिराज ने भी संघ सहित 1983 में तीर्थराज श्री सम्मेद शिखरजी की वंदना की थी। उन्होंने कहा कि तीर्थराज की यात्रा और पर्वत की परिक्रमा करना जैन श्रद्धालुओं के लिए अत्यंत पुण्यकारी अवसर है।

विनोद जैन ''कोटखावदा'' प्रदेश महामंत्री
राजस्थान जैन युवा महासभा, जयपुर

आर्यिका श्री संगममति माताजी के ससंघ सान्निध्य में 35 दिवसीय संगीतमय सामूहिक जाप जारी

अम्बाह, मनोज जैन नायक। नगर अम्बाह में आचार्य श्री सिद्धांत सागर महाराज की शिष्या आर्यिकारत्न 105 श्री संगममति माताजी के ससंघ सान्निध्य में जैन बगीची प्रांगण में 35 दिवसीय संगीतमय णमोकार महामंत्र जाप श्रद्धापूर्वक जारी है। शुक्रवार शाम रिंकू एंड पार्टी, अम्बाह के निर्देशन में आयोजित सामूहिक जाप में महिलाओं, पुरुषों, बच्चों एवं बालिकाओं सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। लगभग एक घंटे तक चले णमोकार महामंत्र के सामूहिक जाप से जैन बगीची प्रांगण भक्तिमय हो उठा। धार्मिक जयघोष से पूरा परिसर गुंजायमान रहा और श्रद्धालुओं ने सामूहिक रूप से महामंत्र का जाप कर आध्यात्मिक वातावरण बनाया। शुक्रवार को श्रीजी की आरती करने का सौभाग्य पूरनचंद जैन एवं रजनी जैन परिवार को प्राप्त हुआ। आरती से पूर्व परिवारजन परेड चौराहे से शोभायात्रा के रूप में जैन बगीची प्रांगण पहुंचे। शोभायात्रा में श्रद्धालु णमोकार महामंत्र का जाप करते हुए भक्ति भाव से आगे बढ़े। परेड चौराहे पर शोभायात्रा पहुंचने पर उपस्थित श्रद्धालुओं ने धर्मलाभ लिया और परिवार का स्वागत किया। जैन बगीची पहुंचने के बाद विधि-विधान से श्रीजी के समक्ष आरती की गई। समाजजनों ने श्रद्धा एवं भक्ति के साथ सहभागिता की। आरती के पश्चात श्रद्धालुओं ने श्रीजी के दर्शन कर धर्मलाभ लिया। पूरनचंद जैन ने बताया कि 35 दिवसीय णमोकार महामंत्र जाप के माध्यम से समाज में धार्मिक एवं आध्यात्मिक वातावरण निर्मित करने तथा अधिक से अधिक लोगों को साधना से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है।

हावड़ा के विवेक विहार में आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज ससंघ के सान्निध्य में भक्तिभाव से चल रहा भव्य श्री शांतिनाथ विधान

हावड़ा. शाबाश इंडिया। विवेक विहार बंगवासी, हावड़ा में विराजमान परम पूज्य आचार्य श्री वसुनंदी जी महामुनिराज ससंघ के पावन चातुर्मास के दौरान जिनधर्म प्रभावना का भव्य एवं आध्यात्मिक वातावरण बना हुआ है। श्रावण शुक्ल दशमी के अवसर पर यहां श्री शांतिनाथ विधान एवं धर्मसभा का आयोजन किया गया, जिसमें सैकड़ों श्रद्धालुओं ने सहभागिता कर धर्मलाभ अर्जित किया। प्रातःकाल भगवान जिनेंद्र देव के मंगल अभिषेक एवं शांतिधारा के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। आचार्यश्री के सान्निध्य में 50 से अधिक श्रद्धालुओं ने भक्तिभाव एवं मंत्रोच्चार के साथ शांतिधारा संपन्न की। इसके पश्चात संगीतमय सर्व ऋद्धि-सिद्धि दायक 1008 श्री शांतिनाथ विधान एवं मंगल पूजन का शुभारंभ हुआ। मधुर भजनों एवं मंत्रोच्चार के बीच 500 से अधिक साधर्मी बंधुओं ने विधान में अर्घ्य समर्पित किए और धर्मलाभ लिया। कार्यक्रम में हावड़ा डबसन से आए सुजीत जैन ''सोनू भैया'' ने कहा कि प्रभु भक्ति के इस पावन अवसर पर उपस्थित होकर मन अत्यंत प्रफुल्लित है। उन्होंने सभी साधर्मी बंधुओं की भक्ति की अनुमोदना की। रिसड़ा जैन समाज से पधारे निरंजन बाकलीवाल ने कहा कि आचार्यश्री के संघ के दर्शन एवं भव्य विधान में सहभागिता का अवसर मिलना पूर्व पुण्यों का फल है। यहां का आध्यात्मिक वातावरण मन को शांति प्रदान करता है। विधान पूजन के उपरांत आयोजित धर्मसभा में आचार्यश्री ने कोलकाता एवं वृहत्तर कोलकाता से आए श्रद्धालुओं को आशीर्वचन प्रदान किए। उन्होंने जीवन में संयम, शांति एवं प्रभु भक्ति के महत्व पर प्रकाश डालते हुए सभी को धर्ममार्ग पर निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम के अंत में आयोजकों एवं स्थानीय जैन समाज ने सभी अतिथियों एवं धमार्नुरागियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

प्रभु के गुणों को सुनो, मनन करो और आचरण में उतारो—यही सच्चा कल्याण : जिनदेवी माताजी

जयपुर. शाबाश इंडिया। सेठी कॉलोनी स्थित श्री महावीर दिगम्बर जैन मंदिर में चातुर्मास हेतु विराजमान परमपूज्या गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न श्री जिनदेवी माताजी के सान्निध्य में शनिवार को सौभाग्य दशमी पर्व श्रद्धा एवं भक्ति के साथ मनाया गया। इस अवसर पर 44 दिवसीय कल्याण मंदिर दीपार्चना का संगीतमय आयोजन भी हुआ। राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ अभिषेक एवं शांतिधारा के साथ हुआ। इसके बाद पूजा-अर्चना की गई। धर्मसभा में चित्र अनावरण, दीप प्रज्वलन एवं पूज्य माताजी का पाद प्रक्षालन किया गया। जिनवाणी भेंट के पश्चात माताजी ने मंगल प्रवचन दिए। माताजी ने कहा कि कल्याण मंदिर स्तोत्र की रचना आचार्य कुमुदचंद्र जी ने उज्जयिनी में भगवान पार्श्वनाथ की स्तुति में की थी। इसमें 44 काव्य हैं। श्रद्धापूर्वक इसका पाठ करने से मन में शांति, भक्ति एवं आत्मिक कल्याण की भावना जागृत होती है। आचार्य कुमुदचंद्र भगवान पार्श्वनाथ के परम भक्त थे और जहां भी जाते, जिनेंद्र भगवान की भक्ति एवं धर्म का प्रभाव फैलाते थे। उन्होंने कहा कि भगवान की स्तुति केवल मुख से नहीं, बल्कि जीवन से करनी चाहिए। वीतराग प्रभु के गुणों का चिंतन करने से मनुष्य के भीतर क्षमा, शांति, समता और वीतरागता के संस्कार जागृत होते हैं। जैसे चंदन के समीप रहने से सुगंध आती है, वैसे ही प्रभु के गुणों का मनन जीवन को सुगंधित करता है। माताजी ने कहा, ''प्रभु के गुणों को सुनो, मनन करो और अपने आचरण में उतारो—यही सच्चा कल्याण है।'' मंदिर अध्यक्ष दीनदयाल पाटनी, महामंत्री धमीचंद कासलीवाल, उपाध्यक्ष सुनील सेठी एवं कोषाध्यक्ष राकेश मुशरफ ने बताया कि पूज्य माताजी के सान्निध्य में महिलाओं ने सौभाग्य दशमी की पूजा की। माताजी ने व्रत की महिमा एवं कथा का भी वाचन किया।

विफलता हमारा भ्रम है, जबकि सफलता हमारा मूल स्वरूप : मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी महाराज

इंदौर. शाबाश इंडिया

राष्ट्रसंत मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी महाराज ने शनिवार को दलाल बाग में धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि विफलता हमारा भय और भ्रम है, जबकि सफलता हमारा मूल स्वरूप है। कोई भी व्यक्ति विफल होने के लिए कार्य नहीं करता। सफलता हमारा स्वभाव है और स्वभाव को कोई बदल नहीं सकता। जल का स्वभाव शीतलता है। उसे गर्म किया जा सकता है, लेकिन उसकी मूल शीतलता नष्ट नहीं होती। इसी प्रकार स्वभाव को विभाव में बदला जा सकता है, लेकिन मूल स्वभाव कभी नष्ट नहीं होता। उन्होंने कहा कि अध्यात्म व्यक्ति को समर्थ बनाने वाली बड़ी पूंजी है। भगवान में जो शक्तियां हैं, वही भक्त के अनुभव में भी प्रकट हो सकती हैं। जैन धर्म का मूल संदेश है कि मनुष्य स्वयं सुखी, समृद्ध, निरावलंबी और पूर्ण बने। जब हम दूसरों का सहारा लेते हैं, तब हमारी शक्तियां कमजोर होती हैं। दुनिया के पीछे चलने के बजाय स्वयं एक कदम आगे बढ़ना सीखें। गिर जाएं तो कोई बात नहीं, लेकिन साहस के साथ आगे बढ़ते रहें। जो स्वयं एक कदम चल सकता है, वह आगे सौ कदम भी चल सकता है। गुरुदेव ने कहा कि मंदिर हमारी आस्था का केंद्र है। मंदिर समिति द्वारा निर्धारित व्यवस्था शुल्क का समय पर भुगतान करना हमारा नैतिक एवं धार्मिक दायित्व है। दिगंबर जैन समाज सामाजिक संसद के प्रमुख सतीश जैन ने बताया कि अखिल भारतीय जैन अल्पसंख्यक महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं महाराष्ट्र सरकार के राज्य मंत्री ललित गांधी, महामंत्री सौरभ भंडारी, मध्यप्रदेश संयोजक डॉ. संजीव जैन, उमेश जैन, उज्जैन दिगंबर जैन समाज सामाजिक संसद के महामंत्री सुनील जैन, विश्व हिंदू परिषद के अनिल कासलीवाल एवं धर्मेंद्र सेठी सहित अन्य अतिथियों ने गुरुदेव को श्रीफल समर्पित कर आशीर्वाद लिया। ललित गांधी ने मध्यप्रदेश में अल्पसंख्यक आयोग के गठन को लेकर गुरुदेव से चर्चा की। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन से हुआ। इसके बाद संगम नगर महिला मंडल ने भावपूर्ण मंगलाचरण नृत्य प्रस्तुत किया। चातुर्मास आयोजन समिति की ओर से अतिथियों का शॉल एवं श्रीफल से सम्मान किया गया। धर्मसभा का संचालन अर्पित जैन एवं अमित सिंघई ने किया। इस अवसर पर डीके जैन, जैनेश झांझरी, सतीश जैन, प्रदीप बढ़जात्या, संजय पाटोदी, मयंक जैन, राकेश गोयल, वीरेंद्र बढ़जात्या, पंडित प्रदीप शास्त्री, पवन पाटोदी सहित बड़ी संख्या में समाजजन उपस्थित रहे।

सतीश जैन: प्रचार प्रमुख-दिगंबर जैन समाज सामाजिक संसद, इंदौर

इंद्रियों के विजेता हैं द्वितीय तीर्थंकर श्री अजितनाथ भगवान : आचार्य श्री नयन सागर जी

एटा. शाबाश इंडिया। पुरानी बस्ती स्थित बड़े मंदिर जी में आचार्य श्री नयन सागर जी महाराज के पावन सान्निध्य एवं निर्देशन में पहली बार 24 तीर्थंकर विधान का आयोजन किया जा रहा है। विधान के प्रथम दिन श्री भक्तामर महामंडल विधान में प्रथम तीर्थंकर भगवान श्री आदिनाथ जी का गुणगान पद्मावती पुरवाल पंचायत कमेटी द्वारा किया गया। दूसरे दिन श्री अजितनाथ विधान का आयोजन श्री दिगंबर जैन वीर मंडल के पदाधिकारियों एवं सदस्यों द्वारा किया गया। प्रातः 6 बजे श्रीजी का अभिषेक एवं बड़ी शांतिधारा आचार्यश्री के सान्निध्य में संपन्न हुई। विधानाचार्य विपिन जैन स्वामी के निर्देशन में विधान की धार्मिक क्रियाएं संपन्न कराई गईं। श्रद्धालुओं ने मंत्रोच्चार के साथ मांडने पर श्रीफल अर्पित कर इंद्रियों पर संयम रखने की भावना व्यक्त की। धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य श्री नयन सागर जी महाराज ने कहा कि जैन धर्म के 24 तीर्थंकरों के नाम सार्थक हैं। द्वितीय तीर्थंकर भगवान अजितनाथ ने तन, मन, इंद्रियों, विषयों एवं कषायों की इच्छाओं पर विजय प्राप्त की, इसलिए वे 'अजित' कहलाए। आज मनुष्य इंद्रियों का गुलाम बन गया है, जबकि भगवान अजितनाथ ने इंद्रियों को अपने वश में किया। उन्होंने कहा कि शरीर के प्रति अत्यधिक राग के कारण सम्यक दर्शन में बाधा आती है। रत्नत्रय की साधना से जीवन की पवित्रता संभव है। मनुष्य अनादिकाल से विषय-वासनाओं में फंसकर अपना अहित करता आया है। पेट तो भर जाता है, लेकिन मन कभी नहीं भरता। आचार्यश्री ने पांच इंद्रियों के उदाहरण देते हुए कहा कि स्पर्शन इंद्रिय के वशीभूत हाथी, रसना के कारण मछली, घ्राण के कारण भंवरा, चक्षु के कारण पतंगा और कर्ण इंद्रिय के कारण मृग अपने प्राण गंवा देते हैं। मनुष्य पांचों इंद्रियों का दास बनकर स्वयं के लिए समस्याएं खड़ी करता है। आशा, तृष्णा और इच्छाएं उसे कभी चैन से नहीं बैठने देतीं।

देशव्रत की मर्यादा और अपध्यान से बचने का संदेश

कलिंजरा. शाबाश इंडिया। सुरेश चंद्र गांधी, नौगांव, जिला बांसवाड़ा, राजस्थान। आध्यात्मिक वर्षायोग 2026 के अंतर्गत आयोजित प्रवचन में परम पूज्य आर्यिका 105 सिद्ध श्री माताजी ने श्रावकों को देशव्रत की मयार्दा, संयमित जीवन एवं अपध्यान से बचने का महत्वपूर्ण संदेश दिया। माताजी ने पंडित दौलतराम जी के ग्रंथ का संदर्भ देते हुए बताया कि दिग्व्रत के बाद देशव्रत में अपने आने-जाने की सीमा निश्चित की जाती है। व्यक्ति को ग्राम, गली, घर, बाजार, बगीचे आदि स्थानों तक जाने की मयार्दा सोच-समझकर निर्धारित करनी चाहिए, ताकि अनावश्यक आवागमन और नियमों के अतिचार की स्थिति न बने। उन्होंने श्रावकों को छोटे-छोटे संयम के नियम अपनाने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि एक दिन में कितने लोगों से बात करनी है, कितने घरों में जाना है, कितनी देर बातचीत करनी है अथवा कितनी दूरी तक जाना है, इसका भी संयमपूर्वक निर्धारण किया जा सकता है। नियम जीवन को अनुशासित करने और धर्म की ओर बढ़ने का माध्यम हैं। माताजी ने चार प्रकार के ध्यान–आर्त, रौद्र, धर्म और शुक्ल–का उल्लेख करते हुए कहा कि केवल मंदिर में बैठ जाना ही धर्मध्यान नहीं है। यदि मन में किसी के प्रति दुख, द्वेष, ईर्ष्या अथवा बुरे विचार चल रहे हैं तो धार्मिक स्थान पर बैठने के बावजूद परिणाम आर्त या रौद्र ध्यान के हो सकते हैं। उन्होंने कहा कि दूसरे का बुरा सोचने से दूसरे का नहीं, बल्कि स्वयं का नुकसान होता है। किसी के सुख को देखकर ईर्ष्या करने के बजाय उसके सुख में प्रसन्न होना चाहिए। उन्होंने व्यापारी का उदाहरण देते हुए समझाया कि पड़ोसी की दुकान पर अधिक ग्राहक देखकर ईर्ष्या या उसके नुकसान की भावना रखना स्वयं के लिए अशुभ कर्मबंध का कारण बन सकता है। माताजी ने कहा कि मन, वचन और काय से किसी का बुरा न हो, ऐसी भावना रखनी चाहिए।

सुहाग दशमी पर जनकपुरी में सामूहिक पूजन

जयपुर. शाबाश इंडिया

जनकपुरी ज्योतिनगर जैन मंदिर में सुहाग दशमी के अवसर पर व्रत रखने वाली महिलाओं के लिए शनिवार को सामूहिक पूजन का आयोजन किया गया। महिलाओं ने साज-सज्जा एवं भक्ति भाव के साथ पूजन में उत्साहपूर्वक सहभागिता की। पूजन विधि विद्वान शिखर चंद किरण जैन ने संपन्न कराई। पूजन के उपरांत श्रद्धालुओं ने मंदिर परिसर में चातुर्मास कर रहे आचार्य श्री 108 आदित्य सागर जी महाराज को अर्घ्य समर्पित किया तथा उनका मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर महिलाओं ने परिवार की सुख-समृद्धि, सौभाग्य एवं मंगलकामना के लिए श्रद्धापूर्वक धमार्राधना की।

चंदा बाबा के दरबार में जो आता है, झोली भरकर ही जाता है : भावलिंगी संत

देहरा तिजारा. शाबाश इंडिया। अतिशय क्षेत्र देहरा तिजारा में अष्टम तीर्थंकर देवाधिदेव 1008 श्री चंद्रप्रभु भगवान का 71वां प्राकट्य तिथि महोत्सव श्रद्धा, भक्ति और उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर परम पूज्य भावलिंगी संत दिगम्बराचार्य श्री 108 विमर्शसागर जी महामुनिराज ससंघ 31 पिच्छियों का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ। मान्यता के अनुसार वर्ष 1956 में श्रावण सुदी दशमी के दिन प्रातः 11:55 बजे भगवान श्री चंद्रप्रभु स्वामी देहरा-तिजारा की पावन धरा पर भू-गर्भ से प्रकट हुए थे। प्राकट्य के बाद से यह क्षेत्र देश-विदेश के श्रद्धालुओं की आस्था का प्रमुख केंद्र बना हुआ है। मंदिर अध्यक्ष मुकेश जैन एवं प्रचार मंत्री उमंग जैन ने बताया कि महोत्सव के अवसर पर प्रातः मूलनायक भगवान श्री चंद्रप्रभु स्वामी का महामस्तकाभिषेक किया गया। प्रातः 8 बजे आचार्य संघ की आहारचर्या हुई तथा 9:30 बजे अनुष्ठान का ध्वजारोहण किया गया। इसके बाद श्री चंद्रप्रभु मंडपम् में धर्मसभा आयोजित हुई। धर्मसभा में भगवान श्री चंद्रप्रभु के प्राकट्य से संबंधित डॉक्यूमेंट्री फिल्म प्रदर्शित की गई। इसके बाद आचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज ने मंगल उद्बोधन में कहा कि तिजारा नगर के आबाल-वृद्धों के पुण्य के उदय से भगवान श्री चंद्रप्रभु का प्राकट्य हुआ। उन्होंने कहा, ''चंदा बाबा के दरबार में जो श्रद्धा से आता है, वह अपनी झोली भरकर ही जाता है।'' उन्होंने प्राकट्य तिथि महोत्सव को श्रद्धालुओं के लिए विशेष आध्यात्मिक अवसर बताते हुए भगवान के गुणों का स्मरण और धमार्राधना करने का आह्वान किया। कार्यक्रम में मंदिर अध्यक्ष मुकेश जैन, महामंत्री नरेंद्र जैन, कोषाध्यक्ष शिंभू जैन, प्रचार मंत्री उमंग जैन, चातुर्मास अध्यक्ष सुरेश जैन सहित अनेक पदाधिकारी एवं श्रद्धालु उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि निर्मल जैन, अल्पसंख्यक विभाग, दिल्ली रहे। पूरे आयोजन के दौरान मंदिर परिसर भगवान श्री चंद्रप्रभु के जयकारों से गूंजता रहा।

रोटरी क्लब जयपुर स्पार्कल ने सूरज मैदान में रोपे विभिन्न प्रजातियों के पौधे

जयपुर. शाबाश इंडिया

रोटरी क्लब जयपुर स्पार्कल के तत्वावधान में आदर्श विद्या मंदिर स्कूल एवं प्रथम राज एनसीसी बटालियन के सहयोग से शनिवार को सूरज मैदान में पौधरोपण अभियान आयोजित किया गया। अभियान में एनसीसी कैडेट्स ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए विभिन्न प्रजातियों के पौधे लगाए और उनके संरक्षण एवं नियमित देखभाल का संकल्प लिया। क्लब अध्यक्ष डॉ. राजीव जैन ने कहा कि पौधरोपण केवल पौधे लगाने तक सीमित नहीं है, बल्कि लगाए गए पौधों को वृक्ष बनने तक उनकी देखभाल और संरक्षण करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। इसी उद्देश्य से एनसीसी कैडेट्स को पौधों की नियमित देखभाल का संकल्प दिलाया गया। क्लब के मेंटर कुलदीप सिंह ढिल्लों ने बताया कि रोटरी क्लब जयपुर स्पार्कल की ओर से इस वर्ष बड़े स्तर पर पौधों का वितरण किया जा रहा है तथा शहर के विभिन्न स्थानों पर निरंतर पौधरोपण अभियान आयोजित किए जा रहे हैं। इस अवसर पर प्राचार्य राजेंद्र कुमार गुप्ता एवं सीबीएसई बोर्ड की प्रिंसिपल सुनयना नागपाल सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे। उन्होंने कैडेट्स के साथ पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छ एवं स्वस्थ वातावरण तथा आने वाली पीढ़ियों के लिए हरित भविष्य सुनिश्चित करने में वृक्षों की भूमिका पर विचार साझा किए।

सर्न, स्विट्ज़रलैंड से शोध कर लौटे जयपुर के होनहार विद्यार्थियों से मिलीं उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी, दी बधाई

जयपुर. शाबाश इंडिया। स्विट्जरलैंड स्थित यूरोपियन ऑर्गेनाइजेशन फॉर न्यूक्लियर रिसर्च (सर्न) में शोध परियोजना पूरी कर लौटे जयपुर के होनहार विद्यार्थी वेद राठी और आर्या राठी से उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने मुलाकात की और उनकी अंतरराष्ट्रीय उपलब्धि पर बधाई दी। दोनों विद्यार्थियों ने हाल ही में सर्न में एक प्रतिष्ठित परियोजना पूरी की है। इस परियोजना का उद्देश्य अदृश्य कण भौतिकी की जटिल अवधारणाओं को दृश्यमान एवं सहज रूप में समझने योग्य बनाना था। इस अवसर पर दिया कुमारी ने विद्यार्थियों की उपलब्धि की सराहना करते हुए कहा कि यह राजस्थान के लिए गर्व का विषय है कि प्रदेश के विद्यार्थी सर्न जैसी विश्वप्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित संस्था में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी ही भारत की प्रगति की मजबूत नींव हैं। विज्ञान एवं अनुसंधान के क्षेत्र में युवाओं की ऐसी उपलब्धियां देश की युवा पीढ़ी को नई दिशा और प्रेरणा देती हैं। उल्लेखनीय है कि इस परियोजना की परिकल्पना भारत के छह प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की टीम ने की थी। टीम में वेद, आर्या, सुचिर, सम्यक, प्रज्ञा और सुश्रुत शामिल थे। इन विद्यार्थियों का चयन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिभागियों के समूह में से किया गया था। सर्न के वरिष्ठ अधिकारियों ने टीम के उत्कृष्ट कार्य एवं नवाचारपूर्ण प्रयासों की सराहना करते हुए परियोजना की विशेष रूप से प्रशंसा की। विद्यार्थियों की यह उपलब्धि राजस्थान के साथ-साथ पूरे देश के लिए गौरव का विषय है।

जयपुर में सद्भावना के सिपाही के रजत महोत्सव पर "एक शाम शहीदों के नाम" कार्यक्रम सम्पन्न

जयपुर. शाबाश इंडिया

शहर के सी-स्कीम स्थित महावीर स्कूल में सद्भावना के सिपाही के रजत महोत्सव के अवसर पर ''एक शाम शहीदों के नाम'' कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ आयोजित किया गया। प्रसिद्ध समाजसेवी एवं सद्भावना के सिपाही के अध्यक्ष राजीव अरोड़ा के नेतृत्व में आयोजित कार्यक्रम में प्रसिद्ध गायक कलाकार गौरव जैन ने देशभक्ति से ओतप्रोत विभिन्न गीतों एवं भजनों की प्रस्तुतियां दीं। इस अवसर पर राजीव अरोड़ा ने कहा कि 20 अगस्त को पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की जयंती सद्भावना दिवस के रूप में मनाई जाती है। सद्भावना दिवस का उद्देश्य राष्ट्रीय एकता, आपसी भाईचारे एवं सांप्रदायिक सौहार्द को बढ़ावा देना है। उन्होंने कहा कि देश के प्रति ईमानदारी एवं कर्तव्यनिष्ठा निभाते हुए भ्रष्टाचार, गंदगी और सामाजिक बुराइयों से देश को मुक्त करने के लिए सभी को मिलकर प्रयास करना चाहिए। विभिन्न जातियों, धर्मों एवं भाषाओं के लोगों के बीच एकता और शांति कायम रहेगी, तभी देश प्रगति करेगा। कार्यक्रम से पूर्व राजीव गांधी के चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। कार्यक्रम में राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की धर्मपत्नी सुनीता गहलोत, पुत्र वैभव गहलोत, जयपुर शहर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष सहित विभिन्न प्रकोष्ठों के प्रतिनिधि अक्षय जैन मोदी, बलराम भारद्वाज तथा सद्भावना के सिपाही के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे। इस दौरान राजीव अरोड़ा एवं वैभव गहलोत का कार्यकर्ताओं की ओर से 51 किलो की पुष्पमाला पहनाकर सम्मान किया गया। कार्यक्रम के बाद सभी अतिथियों एवं कार्यकर्ताओं के लिए स्वरुचि भोज की व्यवस्था की गई।

राजाबाबू गोधा
मीडिया प्रवक्ता, जैन महासभा, राजस्थान